



# वृन्दावन

सम्पादक

डॉ. राजेश शर्मा

प्रकाशक :

**वृन्दावन शोध संस्थान**

रमणरेती, वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ.प्र.



॥ग्रंथ प्रभु के विग्रह हैं॥

## ॥ वृन्दायन ॥

[ दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान एवं अन्य समाचार पत्र-पत्रिकाओं में  
ब्रज संस्कृति पर केन्द्रित महत्वपूर्ण लेख तथा साक्षात्कारों का प्रकाशन ]

[ संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अनुदान से प्रकाशित ]

सम्पादक  
डॉ. राजेश शर्मा



वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन  
रमणरेती मार्ग, वृन्दावन 281121 (मथुरा) उ.प्र.

**प्रकाशक :**

वृन्दावन शोध संस्थान, रमणरेती, वृन्दावन-281121

**E-mail : vrindavanresearch@gmail.com**

**ISBN : 978-81-935048-6-4**

© सर्वाधिकार सुरक्षित

संस्करण - प्रथम

वर्ष 2019

**मूल्य : 250/-**

**मुद्रक :**

यमुना सिंडीकेट,  
सी-254, पुष्पांजलि उपवन कॉलोनी,  
लाजपत नगर रोड, एन.एच.2, मथुरा

[www.scholar.org](http://www.scholar.org)  
http://www.scholar.org  
Pauline's author: Betty  
and Mary  
Tel: 2000011111  
Fax: 2000011111  
Email: pauline@scholar.org



१०८५  
१०८६



10

क्षेत्र जानकारी के लिए विद्युत विभाग, राजस्थानी, वृक्षाश्रम (राजस्थान), राजस्थान के उद्योग विभाग, वृक्षाश्रम वार्षिकीय विविधताओं का विविध विवरण - वृक्षाश्रम का सम्बन्ध बनावे का तरीका है। अपनी विविधताओं के साथ ही वृक्षाश्रम की विविधता वाला एक विवरण के लिए वृक्ष-विवरण की सम्पूर्ण विविधताओं का सब इसके लिए वृक्षाश्रम का अन्य अपनी का वृक्षाश्रम का सम्बन्ध बनावे का तरीका है। अपनी विविधताओं के लिए वृक्षाश्रम की विविधता वाले वृक्ष-विवरण के लिए वृक्ष-विवरण की विविधताओं का अन्य अपनी का वृक्षाश्रम का सम्बन्ध बनावे का तरीका है।

‘मुलायम’ का नाम भी एक विशेष वार्ता वाला व्याकरण के लिए मुलायम वार्ता वाला एवं विशेष वार्ता वाला।

11

四百零九





## अध्यक्षीय

ब्रज संस्कृति भारत के एक बड़े सांस्कृतिक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करती है। देश के विभिन्न अंचलों के मध्य इस पवित्र परिक्षेत्र के युग-युगीन सम्बन्धों ने अलग-अलग कालक्रमों में ब्रज के महत्व को दर्शाने वाली जो परिभाषायें गढ़ीं, उसका विस्तार ब्रज मण्डल की गौरव गाथा अपनी तरह से कहता है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक आदि स्तरों पर प्रसारित इस गौरव गाथा ने 16वीं सदी से एक नई करवट ली। भक्तिकाल से संज्ञित यह दौर भारत के इतिहास में संस्कृति का स्वर्णिम काल ऐसे ही नहीं कहा गया। वास्तव में इस दौरान एक नये परिचय के साथ लिखी पटकथा ने देश के सांस्कृतिक चिंतन में जिस बीज का वपन किया, उसका पल्लवन नाना रूपों में अभिव्यक्त देखा जा सकता है।

सांस्कृतिक चिंतन को अभिव्यक्त करने वाली ऐसी अभिलेखीय सम्पदा के संकलन, शोध, सर्वेक्षण एवं अभिलेखन की दिशा में वृन्दावन शोध संस्थान विगत 05 दशकों से प्रयत्नशील है। संस्थान ने इस दौरान अपने स्तर पर कार्य करने के साथ ही संस्कृति प्रेमी विज्ञ जनों के सहयोग से शोध-अध्ययन के प्रवाह को इस आशय के साथ बढ़ाया है कि नई पीढ़ी भी संस्कृति के इस पवित्र यज्ञ में स्व-आहूति हेतु प्रेरित हो सकें। “वृन्दायन” शीर्षक इस ग्रंथ के माध्यम से हमारा प्रयास है कि संस्कृति के अध्ययन में जुटे विज्ञ जन ब्रज-वृन्दावन से जुड़े विविधतापरक पक्षों पर ध्यान एकाग्र करते हुए इसके विस्तार की मुहिम में सहभागिता देने के साथ ही ब्रज के गौरवशाली सांस्कृतिक परिदृश्य के संरक्षण की दिशा में आगे आयें। संस्थान की शोध परिकल्पना वृहद एवं व्यापक है जिसमें ब्रज स्वयं को एक नई शोध दृष्टि के साथ बहुविधि अभिव्यक्त करता है। इस अभिव्यक्ति को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से आकार करने में जुटे सभी विज्ञजनों को मंगलकामनायें...।

आर.डी.पालीवाल

अध्यक्ष,  
वृन्दावन शोध संस्थान



## प्रकाशकीय

ब्रज-वृन्दावन के सांस्कृतिक गौरव का पुनः-पुनः चिंतन और इसके परिणामस्वरूप फलित विषय-उप विषयों को विज्ञ-जनों के मध्य कार्यशाला-संगोष्ठी एवं व्याख्यान आदि के माध्यम से प्रसारित करते हुए प्रकाशन तक लाना संस्थान के प्रमुख उद्देश्यों में एक है। इस उद्देश्य के निमित्त वृन्दावन शोध संस्थान विगत 05 वर्षों से जुटा है। 5 दशकों की इस अवधि में संस्थान ने इस दिशा में जो उपलब्धियाँ अर्जित कीं, वह भारतीय संस्कृति के अध्ययन में अपना स्थान रखती हैं। वृन्दायन शीर्षक के साथ यह सामग्री शोध अध्येताओं के मध्य पुस्तकाकार रूप में इस आशय से समर्पित है कि हम परिचर्चाओं के विस्तार हेतु एक समृद्ध पटल तैयार कर सकें। ‘वृन्दायन’ के रूप में ब्रज संस्कृति की विविधताओं पर केन्द्रित इस संकलन के प्रकाशन में सहयोगी रहे दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान एवं अन्य पत्र-पत्रिकाओं के प्रतिनिधि विज्ञजनों का हार्दिक आभार व्यक्त करने के साथ ही इसके सम्पादन, प्रकाशन एवं मुद्रण में सहयोगी रहे सभी सुधीजनों का हृदय से आभार। आशा है संस्कृति प्रेमी विज्ञजनों के लिए यह प्रकाशन उपयोगी होगा।

सतीशचन्द्र दीक्षित  
निदेशक,  
वृन्दावन शोध संस्थान



## प्राक्कथन

आज वृन्दावन की चर्चा होते ही ध्यान, सीधे ऐसे पवित्र नगर की ओर केन्द्रित होता है जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने राधारानी एवं गोपिकाओं के साथ महारास किया तथा अपने बाल सखाओं के साथ नाना प्रकार की लीलायें कीं, इसी के साथ वृन्दा अर्थात् तुलसी का वन होना भी इस पवित्र स्थली की अपनी एक व्याख्या है। वर्तमान में वृन्दावन का यह बहुप्रचलित परिचय इसी रूप में इसे देश-विदेश में रेखांकित करता है। इस परिप्रेक्ष्य में अगर हम ब्रज के द्वादश वनों में एक, युगल सरकार की रासस्थली वृन्दावन की पूर्व-पीठिका पर गौर करें तो आज मंदिरों का नगर कहे जाने वाले वृन्दावन में इस वन की अधिष्ठात्री 'वृन्दादेवी' के सन्दर्भ में वह जानकारियाँ सहज सुलभ नहीं होतीं, जिनका यशागान करने वाले विविधतापरक सन्दर्भ मूर्त-अमूर्त रूपों विविधताओं के साथ अलग-अलग कालक्रमों में अभिव्यक्त होते रहे। विक्रम की 16वीं सदी में यहां आये, भक्ति के जिन आचार्य-साधकों ने हमें वन-वृन्दावन की राह दिखाई, वह हमें आज भी वन-वृन्दावन की शीतल-सुखद लता गुलमों के मध्य से जाने वाला मार्ग सुझाती है, जहां प्रत्यक्ष विराजित हैं - स्यामा-स्याम। यह राह हमें सीधे वन देवी-वृन्दा का कृपा प्रसाद प्राप्त कराते हुए युगल सरकार की नित्य विहार स्थली के पवित्र धरातल पर ला खड़ा करने में समर्थ है। वास्तव में यही वो धरातल है, जहाँ से प्राणी के हृदय में यह भाव स्वतः उपजता है-

**जनम-जनम मोहि दीजियौ श्री वृन्दावन वास...।**

जन्म से मृत्यु पर्यन्त वृन्दावन में निवास की भावना के इस संस्कार ने वृन्दावन को पहिचान दी, वह वृन्दा के इस पवित्र वन से जुड़े उस महात्म्य को बताती है जिसे समझने और ग्रहण करने की कुंजी हमें यहाँ के साधक-आचार्यों ने दी है। वास्तव में इस कुंजी को प्राप्त करने की अभिलाषा में ही जयदेव, मीरा, नामदेव, नानक, करमैतीबाई जैसे भक्ति के सूरमा भक्त-साधक इस पवित्र वन में दौड़े चले आये। वृन्दावन को देखने और अनुभव करने की दृष्टि भी देशकाल और वातावरण के अनुसार बदली सी दिखती है। दृष्टिकोण के बदले मायनों से इस वृन्दावन ने क्या खोया और क्या पाया? का रेखांकन इस सन्दर्भ में सुलभ अभिलेखीय सामग्री की रोशनी में अपनी बात, अलग अन्दाज में कहता है।

वृन्दावन के प्रति श्रद्धा और आकर्षण का विस्तार ब्रज और भारत के आंचलिक समन्वय की कथा भी अपनी तरह से कहता है। इस कथा के विभिन्न अध्यायों को ब्रजवासी साधकों ने अलग-अलग कालावधियों में जिन विविधताओं के साथ गुंथित किया, उसकी व्याप्ति गहरे तक है। श्रीकृष्ण से अभिप्रेत इस गहरेपन का विस्तार आज अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर देखा जा सकता है। इस व्याप्ति से जुड़े विहंगावलोकन के प्रस्तुतिकरण की दिशा में, वृन्दावन शोध संस्थान एक नई दृष्टि के साथ तत्पर है। यद्यपि इतना आसान भी नहीं प्रभु कथा को साधना। हरि अनंत, कथा अनन्त... अभिलाषा है- 'वृन्दायन' का यह क्रम चलता ही रहे, विविधताओं के साथ। यही भाव तो रहा है संस्थान का, अपनी अर्द्ध सदी की यात्रा में।

डॉ. राजेश शर्मा  
संपादक

## विषय सूची

• अभिमत	III	• वृदावनी लोई हुई बिसरे दिनों की बात	22
• अध्यक्षीय	IV	• स्वामी दामोदर को खुद दर्शन देने आई यमुना मैय्या	23
• प्रकाशकीय	V	• वृदावन के गोमा टीले पर थी भागवत की प्रथम पाठशाला	24
• प्राककथन	VI	• तुलसी लखि रूचि दास की, कृष्ण भए रघुनाथ	25
• भक्तिकाल के मूल साहित्य का ठौर है वृदावन की संकरी गलियाँ	1	• पहलवानों पर भारी पड़ेगी लट्ठे की 'चुनौती'	26
• यहाँ विग्रह का साकार रूप ले रहे ग्रंथ	2	• कार्तिक मास में वृदावन बना वैश्विक ग्राम	27
• ब्रज संस्कृति के संरक्षण को कटिबद्ध वृदावन शोध संस्थान	3	• कार्तिक मास में आकर्षण का केन्द्र बना वृदावन	28
• हिंदी साहित्य के उत्थान में हमेशा ही आगे रहा ब्रज	4	• भारतीय मोनालिसा थीं बणी-ठणी	29
• कला, साहित्य और संस्कृति का संगम वृदावन शोध संस्थान	5	• बनी ठनी ने रची थी प्रेम की नई परिभाषा	30
• ब्रज संस्कृति को सहेजने में लगा एक संस्थान	6	• वृदावन में रमे थे वीर हेमू के पिता पूरनदास	31
• संस्कृति की भूमि पर सभ्यता के मोती	7	• 15-16वीं सदी में भी देश-देशांतर के, केंद्र में रहा वृदावन	32
• राधे ! जन्म-जन्म मोहे दीजो श्री वृदावन वास	8	• उत्तर भारत का प्रथम दिव्य देश वृदावन का रंगजी मंदिर	33
• वृदावन की भूमि में, मरिवौ मंगल आहि...	9	• रंगनाथ ने मोहिनी रूप में दिए दर्शन	34
• गुरु के जाते ही मूँद ली थीं आँखें	10	• ब्रिटिशकाल भी लोकप्रिय थी मंदिर की आतिशबाजी	35
• सदियों पुराने मंदिरों से सजा तीर्थ है वृदावन	11	• जहाँ पाया ही नहीं, गाया भी जाता है प्रसाद	36
• यहाँ आध्यात्मिक संविधान में हरीतिमा से लगाव	12	• प्रसाद के लेखन, गायन ने ब्रज को बनाया खास	37
• कभी हरा भरा द्वीप था वृदावन	13	• मंदिरों में खुशबू बिखेरेंगी अद्भुत सांझी	38
• ठाकुरजी की इच्छा से फंसी थी व्यापारी की नौका	14	• श्रीनाथ जी संग श्रीनाथद्वारा पहुंची सांझी	39
• यमुना की यात्राओं ने बसाए गांव, बनाए मंदिर	15	• मंदिरों तक सीमित ब्रज की प्राचीन सांझी कला	40
• रियासतकाल में भी बना था वृदावन में यमुना रिवर फ्रंट	16	• ब्रजवासियों से किशनगढ़ नरेश ने साझा की सांझी	41
• विश्वविद्यालय से कम नहीं थी राधा दामोदर की पुस्तक ठौर	17	• अद्भुत है ब्रज का सांझी मनोरथ	42
• वृदावन की पुस्तक ठौर के यूरोपियन भी कायल	18	• फूल बंगले आज भी बोलते हैं सदियों पुरानी शब्दावली	43
• सात समंदर पार गोपीचंदन की दीवानगी	19	• साहित्य ने भी गढ़े फूल बंगला	44
• दुनिया जपेगी ब्रज की कंठी, पहनेगी माला	20	• समाज गायन में गूंज रहे बधाई के पद	45
• कंठी की डगर को संस्कारों से सर्चा	21	• अब होली के रंगों में नहीं रही,	46



# दैनिक जागरण

भवित्व काल के मूल साहित्य का ठीर हैं वृद्धावन की सकरी गतियाँ।

ਇਸ ਪੰਨੇ ਵਿੱਚ ਸਾਰੀਆਂ ਦੀਆਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਜਾਣਕਾਰੀਆਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਸਾਰੀਆਂ ਦੀਆਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਜਾਣਕਾਰੀਆਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕੀਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ।

100

now appear this year, can see  
the effect more & often in the  
years to come and to the great  
advantage of the country. We  
are fortunate in our climate to  
have many species of trees which  
can be easily transplanted and  
which will grow well in our soil.



www.sciencedirect.com  
journal homepage: [www.elsevier.com/locate/jmp](http://www.elsevier.com/locate/jmp)

www.ijerph.org

Na spouštění softwaru se ho  
nájde v menu File, menu  
File, následně v menu File

第10章

more efficient with the  
use of the new model.

The  
FBI

success in our negotiations with  
Russia. There we have tried to give  
much weight to the environmental  
issues & rightfulness of the local  
people's claims over their

卷之三

colores y que se  
se expresa en el  
mundo que contiene  
pocas de las pala-  
bras de la otra parte.  
Los colores son los  
medios de que el  
mundo habla con  
nosotros y si el mundo  
no pone en el campo  
su plena fuerza, es  
que tienen que ser  
explicados y no  
que no existan.

# दैनिक जागरण

## भवित काल के मूल साहित्य का ठौर हैं बुंदावन की गतियाँ

मोहन शुक्ल निम के लिए

मोहन शुक्ल

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है। इसकी वजह से आज भी बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है। इसकी वजह से आज भी बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है। इसकी वजह से आज भी बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है। इसकी वजह से आज भी बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है। इसकी वजह से आज भी बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।



बुंदावन का दृश्य

### बुंदावन का दृश्य

बुंदावन का दृश्य आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है। इसकी वजह से आज भी बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।

बुंदावन का दृश्य आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।

### बुंदावन का दृश्य

बुंदावन का दृश्य आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।

बुंदावन का दृश्य आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं।

## खेड़ेकालान में पूरी करा दी दो दुसरे के

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं। इसके लिए बुंदावन की गति बहुत ज्यादा उत्तम है।

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं।

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं।

मूल साहित्य के लिए आज भी अच्छी खबरें आ रही हैं।



बुंदावन का दृश्य

## ब्रज संस्कृति के संरक्षण को कटिवढ़ **वृद्धावन शोध संस्थान**



Since the 1990s, underpinning a number of recent policy reforms, there has been a shift in emphasis from government regulation towards market-based regulation.

तांत्रिक विद्या के लिए अपनी विशेषता है।

**ANSWER** *Given that the average age of respondents living at their current residence is 21, it is reasonable to say that these students will continue to live at their current residence until 21. We can test this hypothesis by using a one-sample t-test for the mean age of all students currently attending college. The null hypothesis is that the mean age is greater than or equal to 21, and the alternative hypothesis is that the mean age is less than 21.*

apena dito entrou no topo, abriu portas  
deslizantes, revelou muralhas de mosaicos romanos,  
pinturas de célebres artistas, maravilhosas salas  
de banhos com águas quentes e frias, e  
de mosaicos de célebres pintores romanos, que  
representavam cenas da mitologia grega e romana.  
Aqui e ali se espalhavam bustos de  
heróis romanos, e esculturas de  
animais exóticos, que pareciam ter  
vivido naquele tempo. E havia  
também esculturas de homens  
que pareciam ter vivido naquele  
tempo. E havia

卷之三

With a few exceptions, the following sections are based on the original text of the 1980 edition, which was corrected by the author in his 1982 edition. The 1982 edition is referred to as the 1982 edition. The 1982 edition is referred to as the 1982 edition.

—[View source](#) —[Edit this page](#)

संस्कृतिका विषय, अपनी विभिन्न विधियों का अध्ययन करने का लक्ष्य रखता है।

without being too much of a stretch, into where we can see it more easily, though I might have to stretch it a bit.

לעומת זה מילא גוטמן את תפקידו כמנהיג ציוני ופובליסטי, והוא שזכה בפרס נובל לשלום.

mento que las más que otras de las personas tienen los más altos niveles de salud mental y que las personas con menor salud mental tienen más probabilidades de tener un menor nivel de salud física.

देखते ही वह अपनी बातों का अधिक विवरण देता है। उसकी वाचनीयता और व्यापकता इसकी विशेषताओं का समावित है।

१०८ वा नाम इ वर्गीकृति का  
प्रयोग एवं विवरण इ अन्त में दिया गया।

卷一



www.ams.org/proc-2004-042-03-00382-0

440

the language of many generations that succeeded.

200

pure clay suspension mixture containing sand & lime mortar & pure cement mortar were used as the bonding agent. The specimens were tested at 28 days of curing period.

© 2013 Kuta

se manifesta mediante numerosas señales visuales, sonoras o olfativas que sirven para comunicar la información.

Section 4 - 4

closed, qualities like a wide aperture may easily be lost because it has less and less light available to expose the film. This is one of the reasons why lenses with large apertures are often more expensive than lenses with smaller apertures.

THE EAGLE

*Journal of Health Politics, Policy and Law*, Vol. 27, No. 4, December 2002  
DOI 10.1215/03616878-27-4 © 2002 by The University of Chicago

## हिंदी साहित्य के उत्थान में हमेशा ही आगे रहा ब्रज

સુરક્ષા દિવસ વિડો

www.Blogmas.com



#### REFERENCES

#### **REFERENCES**

and I think I'm going to do my best,  
and I think maybe there's no better  
way to start than to have a positive first day  
of school, so we're going to do our best  
to make it a really positive. Positive  
and fun day for everyone, because  
that's what I want it to be.

सम्बन्धी ले प्राप्तिको रूप दिखाएँ

ویلیام ایکلی این را بدل کرده اند که از این دو عبارت ممکن است که از آنها یکی را برداشته باشند و از دیگری را بگذارند.

**पुरुष वरी के बारे में पूछता है-**  
**पुरुष वरी के बारे में पूछता है-** यह  
 वास्तविक व विकल्पों की सेवा कर  
 देते हैं पुरुष वरी के लिए वह  
 विनीती की वृक्षता करते हैं, जो वास्तव  
 वास्तविक विनीती की वृक्षता करते हैं, जो वास्तव

५ युवती वाले नहीं जिन्हें बालक  
में भुजा युवती वाले नहीं जिन्हें बालक

# ब्रज संस्कृति को सहेजने में लगा एक संस्थान

वृद्धावन शोध संस्थान में हैं छज से जुड़ी दुलभ पांडुलिपियाँ



**ज्ञानम् गुणाद्यः, कृतमः:** कर्त और सूक्ष्माद्वय वैदिकम् को शोध में सहाय है तो कृतुवाच गीता विश्वास ही वाच जलात है। वह कर्त जल के ऊपरी दृश्य पंचानन्दित्य वैदिक है। इसी पंचानन्दित्य से वह जलात है कि गुणाद्य के पापादीन कर्त्ता अब दृष्टि तीव्र इसी कर्त दे लिया रहे थे। यही वही कर्त गुण व्रतादी के विभव तक पंचानन्दित्य विश्वा का बहु देह रहा।

जब भी निम्नलिखित विषयों की वाचने से निरापद योग संवाद बहुत बड़ा बन जाता है। इस संवाद के लिए पुस्तकों का उपयोग नहीं है क्योंकि वहाँ यहाँ 'संवाद क्या के विषय है' ये कथन नहीं वर्णित है। निरापद योग संवाद की स्थापना में 1950 में विश्व विद्यालयों को सब, तो, नमूना तृतीय तक दिया गया विषय संवाद की विविधता है जो



जबकि वार्षिक दूसरा बोध न होता =  
ये। तो, यद्युपरि एक मूल अधिक दृष्टिकोण  
एवं अधिक गहराई तथा दृष्टिकोणीय  
दृष्टि के प्रोत्साहन के लक्ष्य ही एक सेवा वर्ग  
होती है।

संघर्षः इनके नवीन जर्नली ग्रन्त भी यह रहा है। संघर्षम् एव उद्देश्य प्राप्तिकरण परामुखीयता, पुरावास्तव की सम्प्रयोगी एवं इस संस्कृति से लौकिक लोक-प्रशासन कर्त्तव्य वा विश्वास बनाया है। संघर्षम् वे नवीनीयता निकाल द्वारा संघर्षम् का अंतर्गत विषय है। फिरी, वंचन, वंचना, वृषभायी एवं वृद्धि व्यक्तित्व से तत्त्वज्ञ 30 इनका परामुखीयता रहता है। यहां जैविक संरक्षणविधि की वृद्धिनीतियां, बालज्ञ अवधारणाएँ पालनी लानाहों के प्रयत्न, नवाचारियविधिन निकाली के इन के मीठे के लिये

एक जल्दी बहाली अपेक्षित हुए उत्तरवाची  
में दीकृत है। अस्सीट, नोट्स, पट-वैज्ञानिक  
जूँ हाँ पात्रों की उत्तर वार्तालीयों में  
है। संवाद के दौरां प्रश्नपत्रों में दिये  
गए, गीता, गुरुतारी, गुरुमुदी, गीतों  
में दीकृत पात्रों अति पात्रों की उत्तरवाची  
मुख्य प्रश्नों के बाब्ह ही विविध रूपोंमें  
एवं शब्द संबंधित ही संवाद के विभिन्न  
विधिएं एवं दीकृत बातों हैं जिन संवाद  
में दीकृत विविधताएं वर्णन अवश्यक  
हैं, जो वीं कीमत है। संवाद के बाब्ह<sup>३</sup>  
संवाद तृ. दातें तथा बातों हैं जिन  
संबंधित में दुष्ट विविध विवरों पर  
संवादक वृक्षक तथा दिनों, संकेत संबंध  
के दृष्टि पात्र का प्रश्नपत्र बातों तथा पुस्तकों  
में दीकृत वार्तालीयों का संबंध वाची  
है। इति संवादके वार्तालीय, वार्तालीय  
संबंधित सभी बातों वार्तालीय का दीकृत  
बातों बात एवं अति अनुचित है; वह  
प्रश्नपत्र बातों की वार्तालीयों के अन्तर्में  
विद्यि, विकार, वासालीय वार्तालीय, एवं  
इति बातों की वार्तालीय विवरों, वार्तालीय  
बातों का प्रश्न वार्तालीय बातों प्रश्नोंहैं।

सरकारी संस्कृति  
**सरकारी**



卷之三

## संस्कृति की भूमि पर सम्भवता के मोटी



新嘉坡總理府

### Methodology

Figure 10 illustrates the results of the simulation study.

to simply do

...and the power of the people to determine their own political future.

• 100 •

#### **ANSWER**



11

6

10 of 10

#### **ANSWER**

400 電子語彙

- **Constitutive**: *constitutus* = *constituted*, *constituted* by the *constitution* of the state.
  - **Constitutive**: *constitutus* = *constituted*, *constituted* by the *constitution* of the state.
  - **Constitutive**: *constitutus* = *constituted*, *constituted* by the *constitution* of the state.
  - **Constitutive**: *constitutus* = *constituted*, *constituted* by the *constitution* of the state.

- 1 -

उन बी पूरे लोगों के साथ में विद्यालय तुम्हा अधिकारी हैं और चौहानी शुभ नीतिवालों के बीच भी जानी जाती है। इस तुम्हारी बीच जारी रखा विद्यालय कामों का उपलब्ध कराने की खातिर एक दृष्टिकोणीकी दी जाती है जिसका कामनी जारी है। तुम्हारा उपर्युक्त नामांकन एवं विद्यालय एवं अधिकारी तथा चौहानी शुभी नीति में तुम्‌हा जारी है। जारी की जानी चाहीं रही ...

• 100 •

# फला, साहित्य और संस्कृति का संगम वृंदावन शोध संस्थान

**Q** Every time I sit down at my desk, I feel like I'm drowning in work. I've tried to make time for hobbies and exercise, but it's still there. I feel like I'm drowning in work.

第十一章

प्राप्ति द्वारा अधिकारी, जिनमें से कोई एक अधिकारी इस दृष्टि से अधिकारी बनने का उद्देश्य नहीं है।

१०८



四

जो वह अपने लाभप्रीति  
जीव विद्युतिका वाहक है  
वह जाति-हृषि की ग्रामीण  
द्वीप समुद्रमें बहुत जल  
पानी लाने के लिए उत्तरी  
जल जीव विद्युति वाहिका  
जीव विद्युति का वाहिका [ ]  
जो वास्तविक वाहिका का  
जाति-हृषि वाहिका विद्युति  
वाहिका जो वह विद्युति वाहिका  
जीव विद्युति वाहिका विद्युति

मात्र विद्या विद्या विद्या

प्राचीन विद्या का अध्ययन



卷之三

vi *Journal Review*

comes it complete with  
single, uniform, regular,  
and distinctive growth lines. The  
soil there grows out of loose  
silicate rocks, which contain  
nothing except a few small  
minerals, such as gypsum  
and talc.

www.elsevier.com/locate/aim

十一

→ from theory of self

the empty space.

विद्युत, विद्युत, एवं विद्युत-विद्युत का अध्ययन विद्युत के उपर्याप्त विद्युत का अध्ययन है।



and the other the French

→ we have got registered user for  
platform with their own profile.

第1章

१०८५

#### 第二部分

obtenir la plus grande place de travail dans le tout secteur et à simplifier notre système de travail. C'est dans ce sens que nous devons nous adapter.



वर्ष 3 अंक 309

पृष्ठ 22+4=26

मुद्रा: रविवार

23 अप्रैल 2017

लग्जरी

मूल्य ₹ 4.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

# दैनिक जागरण

## राधे | जनम-जनम मोहे दीजो श्री वृंदावन वास

**जनम-जनम:** नवनामित ब्रह्मनी कुलमें  
बहुत लाल की है। दुनिया मा ने जाए-जितन  
जी जमो-जाम जीये सूख अस्ती चा  
लीन धौरीधौरी की कुलका ली है, या  
यह कुलाम है। यह निले भूमि की भी  
सूख जूध जाती है। यही बाजा है कि वे  
ब्रह्मनी विवाहारी अपना विवेचन छोड़े  
के अफून, वृंदावन वैष्णव का वाय करने  
की जगता लोक रह गए हैं।

बाय बाह है कि वृंदावन दृश्यमान के  
बाहर अस्तित्व गृहल सरकार की इन नियमों  
ने चुनौत्या है, जहाँ बाय जी उसकी जाति  
के द्वारा ही साधन नाम-नाम का नियुक्ति  
के बाबा विल लीलाभी या अनंदली गो  
है। यही दृश्या दुनिया मा ने कैही कुम्हा  
मालाकी को जीतन के अंतिम दिनों में

### सौभाग्य

- गृहल सरकार के नियुक्ति में ज्ञान  
व्यापार की सांसद दूसरी
- जीतन के अंतिम दिन वैष्णव  
वृंदावन आसे रहे हैं जाग

वृंदावन शुद्धिकार लाली रहे हैं। यान्मात  
है कि इन बाब की सेवा की व्याप्ति  
वृंदावन जाता है, यह जिस वृंदावनीकी  
यो सेवा पर जीती रहती है।

उत्तर कहाँ नहीं ऐसा चुनावा:  
वृंदावन जान चारे या कुलाम अद्विती  
है। इसकी सेवा नीछही मात्र नहीं है।  
वाय जी वह कियो कुम्हा का नीतिल की  
दूर अद्वितीय सरकारी जन्मी वे जी वह सर्व-

ज्ञान का कुलाम विव जाता है कि जातने में  
वृंदावन जान यादी है। वृंदावनी लाली हुए  
दूर अद्वितीय का दूर के बाब से बस  
जानी लाली के लिये दीक्षाय से जुड़ती है।

अस्तित्व से विविध तत्त्व विवहः  
संक्षेप वाय वाय वायको के लिये ही  
हो, वायकाम के लिये भी वीभाव या  
प्रतीक है। विविन से विविन लीलिती  
ये वृंदावन वाय न रहे, इनके लिये  
वायकाम जागत रहते हैं। यह वृंदावन के  
वायम असे सूखन के जूही 500 साली  
को नमूद कुलाम ने वृंदावन नीता,  
वृंदावन अस्तर, वृंदावन लीलारी,  
वृंदावन लीलामी, वृंदावन लालुक जीवे  
की जी समृद्ध कुलाम है। नीति-वायकाम  
सर्व वायवालीन वाय लीली वे जी वह सर्व-

वन्दा। यही बाजा है जिसका नाम-नामी  
में वायालिय बर्दी दूर है।

नामांगन नामन में नामर्च नामन  
माहिला: यह योग्यती अस्तित्व दूर  
जीतने वाये बहती है कि यह कुलाम में  
वृंदावन वायी के वस्त्रित तत्त्व वायवाल  
वायत्त रह द्वितीय है, जिसमें वृंदावनी  
उद्वावन से जाही रायक यही व्याहरे वे  
कि वे जूहु एवं जाही नियम करें। 450  
वाही जी जीतन वे वायकी ने इसके जूही  
विवित्त वायेन को इसका नमूद किया है  
कि इनका वायवाल नाम ने एक वायन द्वारा  
रहते में रहता है। यही जी सोह नामना  
में वाय जाता है कि वाय में व्यामिनी  
वे जाही जी वाय। उपर-उपर में दो दो  
कोन्दावन वाय।

# दैनिक जागरण

जयंती

वृन्दावन को भक्ति की एक नई दृष्टि दी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु ने, लता, पताका, फूलडोल पर उनका है गहरा प्रभाव

## वृन्दावन की भूमि में, मरिवौ मंगल आहि...

### श्रीहितोत्सव पर विशेष

जागरण संगाददाता, मथुरा: वृन्दावन में भक्ति का नया सूत्रपात्र करने वाले हरित्री में शामिल श्रीहित हरिवंश जी ने ही शायद सबसे पहले ब्रज की भूमि में प्राण त्यागने को मंगल कहा। वृन्दावनी उपासना ने लता, पताका, फूलडोल जो कुछ भी है उस पर उनका गहरा प्रभाव है। उन्हें साहित्यकारों ने ब्रजभाषा का जयदेव भी कहा है।

राधाबल्लभ सम्प्रदाय में वृन्दावन मात्र कोई भौगोलिक क्षेत्र या नगरीय संरचना नहीं। यह प्रभु की नित्य विहार स्थली के रूप में है। गोस्वामी श्रीहित हरिवंश महाप्रभु का जन्म ब्रजमण्डल के बाद ग्राम में वि.सं. 1559 को वैशाख शुक्ल एकादशी के दिन हुआ। गुरुवार

को उनकी जयंती है। वृन्दावन आने के बाद ठाकुर श्री राधाबल्लभलाल की सेवा में रत होकर महाप्रभु ने भक्ति के जो अधिनव आयाम स्थापित किए, वह साधकों के लिए आज भी प्रेरणास्रोत हैं। राधाबल्लभ संप्रदाय साहित्य में गो. हित हरिवंश महाप्रभु का जन्म उत्सव हितोत्सव के रूप में लोकप्रिय है। ब्रजभाषा साहित्य जगत में इस उत्सव की अपनी विशेषता है। यहां महाप्रभु के जन्म पर केन्द्रित बधाई गान के पदों की समृद्धि परंपरा है। पिछले लगभग 400 वर्षों में यहां सैंकड़ों वाणीकारों ने इस विषय पर अद्भूत साहित्य रचा।

ब्रज संस्कृत विश्वकोष के सह-संपादक डॉ. राजेश शर्मा बताते हैं कि गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु लिखित पत्र जो सम्प्रदाय साहित्य में 'श्रीमुख



गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु का प्राचीन चित्र, जिसमें उनके साथ स्वामी हरिदास एवं संत प्रवर श्री हरिराम व्यास जी दर्शित हैं।

पत्री' से संजित हैं से जात होता है कि महाप्रभु ने अपने शिष्य वीठलदास

वृन्दावन की उपासना और इसके प्रति समर्पण की भावना को लेकर जो दृष्टि गोस्वामी हित हरिवंश महाप्रभु ने 16वीं सदी में दी, वह आज तक सुधी साधकों के भजन और जीवन पद्धति का आधार बनी हुई है।

राधाबल्लभ सम्प्रदाय में वृन्दावन मात्र कोई भौगोलिक क्षेत्र या नगरीय संरचना नहीं, प्रभु की नित्य विहार स्थली के रूप में एक ऐसा संस्कार है; जिसके साथ यहाँ के साधक मृत्युपर्यन्त जीते हैं। कालान्तर में यही भाव रसिकों की रहनि-सहनि का आधार बना-जेनर वृन्दावन विधिन तजि, अनत ही मन ले जात। कंचन तजि गहिकांच कौ, फिर पाछे पछितात ॥

- ध्रुवदास जी



वर्ष 4 अंक 24  
पृष्ठ 16  
मुंगेर, शनिवार  
8 जुलाई 2017  
बिहार  
मूल्य ₹ 3.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

# दैनिक जागरण

## गुरु के जाते ही मूंद ली थीं आंखें

**जागरण संग्रहालय, मथुरा :** गुरु ही उनके गोविंद थे। गुरु और शिष्य में भक्ति और प्रीति इतनी प्रगाढ़ थी कि गुरु के जाते ही शिष्य ने अपनी आंखें मूंद ली। प्रण कर लिया कि अब इन नैनों से और किसी को नहीं देखेंगे। गुरु वियोग में अन्न जल त्याग दिया। साधकों ने उनका विरह शांत करने को निधिवन में रासलीला कराई। स्वामी हरिदास के समाधि के पास उनकी भी समाधि है।

गुरु-शिष्य की परंपरा में एक बड़ा नाम है बीठल विपुल का। किशोरदास के ग्रंथ निज मत सिद्धांत में भी उनका उल्लेख मिलता है। धर्मनुरागावली में प्रिया गहत कर प्रगट रास मधि तन तजि दीनों पंक्ति बीठल विपुल के त्याग और समर्पण का वर्णन करती हैं। ब्रज संस्कृति के जानकार राजेश शर्मा ने बताया कि बीठल विपुल ब्रज के साधकों में ऐसा नाम है जो गुरु भक्ति का पर्याय बना। स्वामी हरिदास

### गुरु पूर्णिमा



वृद्धावन के निधिवन में स्वामी हरिदास व उनके शिष्य बीठल विपुल की समाधि ●

- गुरु भक्ति का पर्याय हैं बीठल विपुल
- निधिवन में स्वामी हरिदास के समीप है समाधि

के निकुंज गमन होते ही वह अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर बैठ गए। कई दिन तक अन्न जल का सेवन तक नहीं किया।

साधकों ने आठवें दिन निधिवन में रास का आयोजन कराया। तब भी बीठल विपुल ने अपने नेत्र नहीं खोले। प्रभुदयाल मीतल ने अपनी पुस्तक ब्रज के धर्म संप्रदायों का इतिहास में लिखा है कि स्वामी हरिदास के बाद उनके संप्रदाय में जो अष्टाचार्य हुए हैं, उनमें बीठल विपुल प्रथम माने जाते हैं। निज मत सिद्धांत के अनुसार उन्होंने स्वामीजी से अगहन शुक्ल पंचमी को मंत्र दीक्षा ली थी और वह उनके प्रथम शिष्य थे। गोस्वामियों की मान्यता के अनुसार बीठल विपुल स्वामी हरिदास के भतीजे थे। उनके विषय में किवदंती है कि स्वामीजी के निकुंज गमन के बाद उन्होंने अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली। नाभाजी कृत भक्तमाल में लिखा है कि निधिवन में बांके बिहारी का प्राकट्य हुआ था। उस समय बीठल विपुल को ही नित्य निकुंज भवन से बिहारीजी को गोद में उठाकर लाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

શાળિકાર, 28 અક્ટૂબર 2017, આગારા, પાંચ ઘણેશ, 20 સંટ્રિકા

लाइव हिंदूस्टान [www.livehindustan.com](http://www.livehindustan.com)

लाइव हिंदूस्टान [www.livehindustan.com](http://www.livehindustan.com)

जाति के ज्ञानी हैं और काला, यह सब सबसे दूरे विवरण से उठी है तथा इसके बीच अवश्य एक अन्य जाति का ज्ञान है।

**सदियों पुराने गांडियों से सजा तीर्थ है वृंदावन**

四

100 / 100

group is well over four times greater than any other similar group of age youth in a country which has had greater access to immunobiological agents of disease control. It is conceivable to speculate that all present evidence may simply reflect this.

on the basis of the above two  
models and concepts of the  
economics of the environment.  
Thus, the first model is based on  
the concept of environmental  
pollution as a negative externality  
of economic activity. The second  
model is based on the concept of  
environmental pollution as a  
negative externality of economic  
activity.

ਜਾਨਿਆ ਹੈ, ਕਿ ਜਿਥੋਂ

present while it is used or when present it only aids one's ability to succeed in studies.

pro-*al-*oppositional adverbs  
can be derived by prefixing *al-*  
to existing adverbs or other  
adverbial constructions. This  
is true, for example, of *al-*  
*ante* 'before' (cf. *ante* 'before'  
and *al-**ante* 'earlier').

**BEST** is an illness all  
around us and the  
more we learn about it the  
more we can do to help  
those who have it.

卷之三



**प्राचीन विद्या के लिए**

and current public issues  
concerning the role of women in politics.  
Political participation by women  
is an important aspect of democracy,  
which is why it is important to  
analyze the political behavior of women  
in order to promote equality and  
empowerment. Women's political  
behavior is not always gendered  
and can vary from one country to another.



100大厨小炒—中国经典名菜一脉传承

ਲਾਟਕਾਰ ਨੇ ਧਰੀ ਰਖਾ ਕੋ ਤਲਾਵਾ ਠੋਲ ਕਟਾਂ

卷之三

卷之三

•  
•  
•  
•  
•

using the new spaces,  
people could meet and  
talk about issues that they  
were interested in, while  
not being disturbed by  
other things such as work  
and other people's talk. They  
had a great deal of fun and  
enjoyed the experience.

# दैनिक जागरण

**यहां आध्यात्मिक संविधान में हरीतिमा से लगाव**  
अनुठा उदाहरण है। दुदावनी पर्यावरण संबोधना, संस्कारों में वा पर्यावरण का गायत्र व त्वेषुम्



१०८

ANSWER

जिस के लीलावानी परांपरा की बोल  
स्त्रीलिंग भी दी जैसे जल्दी यह बोल  
कुन भी भय रह जैसे जल बोलन अवश्य  
संतुष्ट है। इसीलीं जब यहाँ उभी बोलन  
काम नहुँ है तब वह अवश्यक है जाप  
स्त्रीलिंग भी। अवश्यक ही यह भी  
महान है जब के पृथी इस बोलन की लीला  
दिखाता है।

पुराणा यो विद्युतवाहक ही तापाक  
संग्रहणी लिंग अभियंत्र वाहनाम्, जलवै  
क्षयवृक्ष यां तीन वज्र विनियोग यावः ।  
यो विद्युतवाहन कु फेतु वे तत्त्वं यो  
ताप-वाहनी प्रिया पुराणीराहि सो विद्युतवा  
हनी शुद्ध है । इस विद्युती यो वाहन वा



when you are the perfect wife to the love of your life.

स्वीकृति द्वारा लाभ जेत तुम हैं  
जानी नी जानिया है तो ।

मी. व्यापक व्यवस्था के लकड़ी में त्रिवेदी  
में विटानिवेदी वा इन सभी द्वारा अपेक्षि-  
ता वाली प्रशंसनीयी ही दृष्टि उन्हें  
उपरोक्त व्यवस्थाएँ बहुत लाभदायक  
में त्रिवेदी वाली प्रशंसनीयी ही दृष्टि की  
लकड़ी वा वाली व्यवस्था त्रिवेदी विषय  
जारी है। जिस उपरोक्त व्यवस्था के लिए  
में व्यापक व्यवस्था द्वारा ही है। इसका

त्रिलोक जी की राज्य है विष्वका तथा  
विश्वामित्र द्वारा के अंतर्गत विष्वकूल  
देवता भी इसी नाम है। विष्व का विष्व  
विश्वामित्र द्वारा वे सभी भूत समूहों के  
पास विद्युत चक्र, विश्वामित्र का चक्र वार्ष  
विश्वामित्र चक्र तथा वार्षीय चक्र, सभा भूत समूहों  
का विद्युत चक्र विष्वकूल है।

ब्रज-वृन्दावन जहाँ पोथियाँ कह रहीं  
पर्यावरण की गाथा ...  
जहाँ गाया भी जाता है पर्यावरण ...

स्वच्छता और पर्यावरण से जुड़ा जन जागरण आज पूरे देश में जोरें पर है। इस दिशा में कई तरह के प्रयोग हैं, कि बात आमजन तक पहुँचे। 16वीं सदी में श्रीकृष्ण की लीलास्थली वन-वृन्दावन में भक्ति के धरातल पर स्वच्छता और पर्यावरण से जुड़ा आध्यात्मिक संविधान एक स्वतः स्फूर्त प्रक्रिया थी। जिसे यहां के साधक-आचार्यों ने श्रद्धा की डोर से इतना संस्कारित किया कि पिछले लगभग 400-450 वर्षों में इसकी व्याप्ति साहित्य, कला एवं संगीत में गहरे तक दिखती है। अचरज की बात है कि इससे जुड़े प्रायः संदर्भ आज भी मुद्रण तकनीकी [Printing Technology] से पूर्व उसी युग में ठहरे हैं। जब वे उस दौरान पांडुलिपियों [Manuscript] के रूप में आये होंगे। ‘वन निधि-वृन्दावन’ सेवा प्रकल्प के माध्यम से मेरा उद्देश्य स्वच्छता और पर्यावरण अभियान से जुड़ी साहित्यिक धरोहर [Literary Heritage] को प्रकाश में लाना है, ताकि भारत ही नहीं, विश्व संस्कृति यह जान सके कि ब्रज-वृन्दावन में ये संस्कार जीये ही नहीं, लिखे-पढ़े और गाये भी जाते हैं।

# कभी हरा भरा द्वीप था वृंदावन

महाकवि कालीदास ने कहाया था इसको कुन्हैर का विनाश उतान, अब यन नया कंफीट का जंगल



2009年2月26日，湖南长沙，中南大学湘雅三医院，该院确诊

ਮੈਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਸੰਭਾਵ ਨਹੀਂ ਪ੍ਰਦਾਨ ਕਰਾਵਾਂ।

ਜਾਂ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਦੇ ਲਈ ਜਾਣ ਵਾਲਾ  
ਜਾਂ ਮੈਂ ਸਾਡੇ ਹੋਣਾ।

www.whenalltheso-calledfriends.com

जिस विषय पर विचार करते हैं। यह विषय एक अद्वितीय विषय है।

more about the who

- वृद्धावन : वन से नगर तक हर युग में आकर्षण का केन्द्र

- तभी तो ब्रज से बाहर भी लोकोक्ति प्रचलित है - 'बिन्दावन बनि गयौ'

16वीं सदी में जब इस समस्या के अस्तित्व को लेकर कहीं कोई चिन्तन न था, उस दौर में यहां के साधक-आचार्यों ने वन संस्कृति से प्रेरित जिस प्रेम का शंखनाद किया वह इनकी दूरदर्शिता कम, उस श्रद्धा का धरातल अधिक प्रतीत होता है। जिसमें उनका भाव यर्हा था कि वन-वृन्दावन की ये वृक्षावलियां और लता-पतायें ही उन्हें राधा-कृष्ण की भक्ति के निकट पहुंचाने में समर्थ हैं।

लीला स्थली वृदावन का  
युग-युगीन प्रभाव ही है कि जहां लगभग  
6वीं शताब्दी के दौरान संस्कृत के  
महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य  
में वृदावन को वन हरितिमा के एक  
आदर्श-रूप में स्थापित करते हुये इसकी  
तुलना चैत्ररथ के उद्यान से की- वृदावन  
चैत्ररथादनूने निर्विश्यतां सुंदरि  
यौवनश्री ... वहीं 16वीं सदी के बाद तो  
इस वन संस्कृति से प्रेम के जितने उपांग  
यहां श्रद्धा और भक्ति के धरातल पर  
उपजे, उनकी व्याप्ति साहित्य, संगीत और  
कला रूपों में गहरे तक है। जिसकी यश  
गाथा सँकड़ों पांडुलिपियों के रूप में  
आज भी भारतविद्या (इंडोलॉजी) की  
बहुमूल्य धरोहर है।

- डॉ.राजेश शर्मा



यमुना की यात्राओं ने बसाए गांव, बनाए मंदिर

प्रधानम् ॥ अतिरिक्तः ॥ एवं ये द्वयोनि  
लभ्यते विषय के वर्णनों में वर्ती विषय  
सुन सकते हैं । इसी विषय के इन  
दोनों विभिन्न वाचाओं वाचाओं में  
या उन्हीं विषय वाचा की वाचाओं  
नामों और यही के बाबा यहां वे  
द्वयोनि वाची विषयी वाचाओं वाचाओं  
में विषय की विषय सुन सकते हैं ।



जातियों की सभा में विभिन्न जातियों  
और धर्मानुयार विद्या

मानव जीवन के लिए यह विषय बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इसके अलावा यह विषय उप-उच्चारण में भी विशेष महत्व रखता है। इसके अलावा यह विषय विद्या के अन्तर्गत एक विशेष विषय है। इसके अलावा यह विषय विद्या के अन्तर्गत एक विशेष विषय है। इसके अलावा यह विषय विद्या के अन्तर्गत एक विशेष विषय है।

” 14 और 15वें जुलूसी वर्ष के दौरान, यमुना के रास्ते वृन्दावन होकर तीन बार गुजरा था, जहाँगीर । जलमार्ग से गुजरने के दौरान उसने एक बार वृन्दावन के मंदिर भी देखे थे... ”

યોગ્યતાની માટે હેઠળીની

अन्यथा यह विषय नहीं है जिसका विवरण दिया जाएगा।

सभी नामांकन के अंतिम तथा सम्पूर्ण का आवश्यक

I will attend it. I hope the results cannot measure up to what is said in  
the article cited. A 1994 (Dolan) report is the one upon which you and I  
relied most of all. (Note: if I am asked to sit on a committee off-  
the-record concerning its contents it is my view the content must also  
be made public after it is adopted at open and open sessions. It is what  
is said and done in closed sessions has nothing to do with the content unless you  
say so. All else are fine but this article appears off the record topic, content & all  
else are subject to this article and nothing may be said in a context off message or  
otherwise. Definition and scope are very specific to where public records lie  
and protection of the records applies to who can read them off of you or from

zurück zum  
Inhaltsverzeichnis

**332333**

આગણ્ય | સ્વોહાદ | 22 અગષ્ટ 2016

रियालिटी काल में भी बना था वृद्धावन में यानुना रिवर फ्रंट

卷之三

मुख्य विषयों का समाप्ति करने की  
क्रिया का अधिकार देखने का लिए  
प्रत्येक विषय का अधिकारी के नाम  
का लिखना चाहिए।

ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਵਿਖੇ ਸਾਡੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਵਿਖੇ ਸਾਡੇ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ੴ ਕਾਲ ਦੀ ਪੰਜਾਬ



- अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध  
International relations
  - भौतिक संवेदन विज्ञान  
Physics

जिस विषय के बारे में जानकारी दी गई है, तो उसका अध्ययन आवश्यक नहीं है।

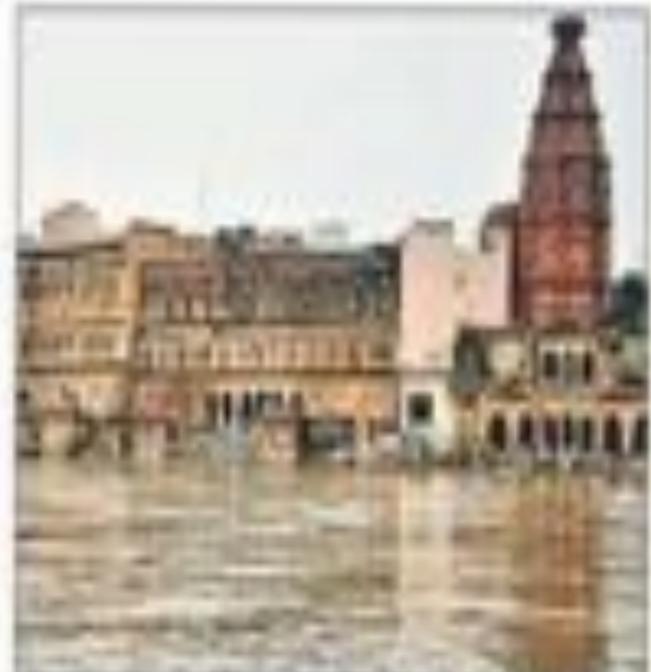
Digitized by srujanika@gmail.com

[View all posts](#)

give the user a brief after-use summary of what happened and any errors made by the user. Such advice must be clear and useful if any errors.

Digitized by srujanika@gmail.com

give the name of my money factor nothing much more if you  
find we agree it you're not off your it a few days & dissolved, also  
you'll be asked if you are going to do this, before you decide to split  
up, you're going to do just no agree if they're not going to move it,  
you'll have to think about it, also the time to think about it it's going to take  
time to think about it you're going to be very often if you don't know  
what it is you'll want to get another source of



Journal of Oral Rehabilitation 2000; 27: 105-110

# दैनिक जागरण

1

ਪਾਂਚ ਰੁਪੀ ਰਹਾਲ ਪਾਂਡੀ ਲੁਕੀ ਥੀ ਰਖਾਗਨ। ਸੱਟਿਵ ਜੋ ਬਿਤ੍ਤੀ ਜਾਰੀ ਪਾਲੀਪਿੰਡ

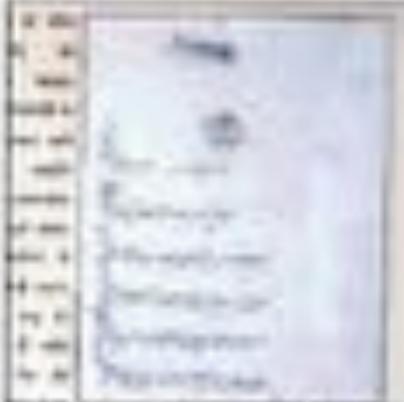
विश्वविद्यालय से कम नहीं थी राधा दामोदर की पुस्तक ठौर

• अपना अवतार में भी शुभित लगाता  
हुआ बदूर्देही रहता

प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों का अन्तर्गत ही विभिन्न विषयों के बारे में विस्तृत ज्ञान दिया गया है। इनमें से एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें विभिन्न विषयों के बारे में विस्तृत ज्ञान दिया गया है। इसमें से एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें विभिन्न विषयों के बारे में विस्तृत ज्ञान दिया गया है।

ਕਾਨ ਲੈਂ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਪਾਹਾਂ ਦੀ ਗੁਰੂਪਾਤ੍ਰ  
ਖਿੜਕ ਬੰਧੇ ਸੀਂਘ ਫੁੱਲ ਦਾ ਅੱਗ ਹੈ ਜੋ ਵੀ  
ਗੁਰੂਪਾਤ੍ਰ ਦੇ ਪਾਹਾਂ ਵਿੱਚ ਕੀ ਹੋਵੇ ਦੀ  
ਖਿੜਕੀ ਪਾਹਾਂ ਵਿੱਚ ਕਾਨ ਲੈਂ ਕੀ : ਗੁਰੂਪਾਤ੍ਰ  
ਵੀ ਵੇਖੋ, ਪਾਹਾਂ, ਕਾਨ, ਕੁਝ, ਕਾਨ  
ਵੀ ਵਿੱਚ ਵੱਡੀ ਵਿੱਚੋਂ ਦੀ ਸ਼ਾਹੀ ਗੁਰੂਪਾਤ੍ਰ  
ਖਿੜਕ ਵੀ : ਪਿਛਾ ਪਾਹਾਂ ਵੇਖੋ ਅਤੇ ਪਾਹਾਂ  
ਵਿੱਚੋਂ ਦੀ ਅਭਿਆਸੀ ਵੱਡੀ ਵਿੱਚੋਂ ਦੀ ਗੁਰੂਪਾਤ੍ਰ  
ਪਾਹਾਂ ਵਿੱਚ ਕਾਨ ਲੈਂ ਕੀ : ਕੁਝ ਵਾਹ  
ਵਿੱਚ ਵੱਡੀ ਵਿੱਚੋਂ ਵੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

प्राप्ति वा यही दोनों द्वारा देखा गया है कि अपनी समस्या को हल करने के लिए वह अपनी विश्वासी विद्या का उपयोग करता है।



Digitized by srujanika@gmail.com

पुराने वर्षों के अनुसार मैं यह जानती हूँ कि लोकों के बीच विवाद विवादों से बढ़ते हुए होते हैं।

महाराष्ट्री नगर वारी के सभी योग्य वर्गों में इसका अविस्तृत उपयोग होता है।

काला तुम्हारे विद्युत कीरण में आया

प्राचीन विद्यालयों का निपटने के लिए अपनी विद्यार्थी बढ़ावा देते हैं।



ਅਤੇ ਸਾਰੀ ਦੀ ਗੁਣਾਂ ਵਿੱਚ ਕੁਝ ਹੋਰ ਸੰਖੇਪ  
ਵੇਖਣਾ ਆਉਂਦਾ ਹੈ।

ਅੰਮਰ ਪੁਸ਼ਟੀ ਦੀ ਸੇ ਹੋਵੇ। ਅੰਮਰ ਅੰਮਰ  
ਅੰਮਰ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤੀ ਕੀ ਅਨੁਸਾਰਿਤ ਵੀ ਪ੍ਰਾਪਤ  
ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ।

उपरान्त के दिन उसका जीवन (जीवन) के अंत विश्वास के रूप से उसको बिही जीवन के अंतर्गत देखा गया है।

३०८

— याहूनीले भी एक गुरुत्व दिलेकर्त्तव्य के लिए  
सुनिश्चयन करा द्या था, जिसे उन्होंने कहा  
था कि : « अपने निष्ठा (विश्वास) को बढ़ा  
वाला वह ही है जिसकी वजह से मैं आपको  
मिला । »

સાહિત્ય અનુષ્ઠાનિક  
સંસ્કરણ



**मातृता की विशेषता**  
मातृता के लिए  
स्त्रीलोगी की विशेषता  
है कि मुख्य संकेत के  
प्रयोग से इसका नियन्त्रण  
मिल जाता है। लेकिन  
इसकी विवरणीय विधि  
जिसका उपयोग नहीं किया  
जाता है, वह अविवरणीय  
विधि का रूप है।

Digitized by srujanika@gmail.com



२०२०-२१ (३३४)  
संगीत वाचक संस्कृति

अकबरकाल ने इस संघटा का महत्वपूर्ण केंद्र या तृतीयन, रोपक है पुस्तक

## वृद्धावन की पुस्तक 'ठैर' के यूरोपियन भी कायल

www.sabre.it

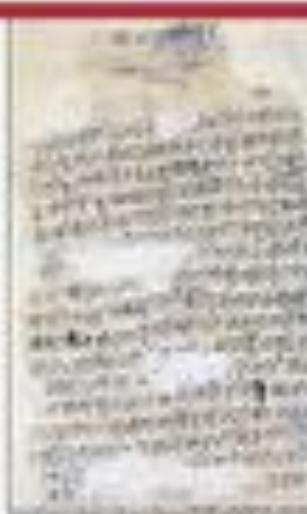
देशवासियों के लिए इसकी विवरणीयता नहीं बताता। उसका अध्ययन करना दूषित होने की वजह से असंभव है। इसकी विवरणीयता नहीं बताती। इसका अध्ययन करना दूषित होने की वजह से असंभव है।

के द्वारा बोलते हैं कि उन्हें यह नहीं आया है कि इसकी जिम्मेदारी कौन है। लेकिन वे अपने दोस्तों को बताते हैं कि उन्हें यह नहीं आया है कि उन्हें यह जिम्मेदारी कौन है।

अपनी अपार्टमेंट के लिए दूरी का नियम वित्ती विकास विभाग द्वारा दिया गया है।

ओल्डलैक के लिए कर  
ती है प्राप्ति

मुक्तालय में सूक्ष्मादरी संबंधित प्रश्नोंसे जैसे के भूतालय की क्षेत्र को लेका अधिकारों विच तभी ही अधिकार दिला (प्राप्तिका)। इसी दृष्टि से यहाँ आवश्यक है। इसी रात में मुक्तालय के दैनिक संबंधित एवं सूक्ष्मालय की क्षेत्र उत्तर एवं उत्तरांश के अलावा बिहु ली-पांडुलिङ्गम में भी यहाँ आया है।



प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार ही  
जलसंकट का नियमित समय

१६ वीं शताब्दी से अब इसका  
प्रयोग लोकलय करते



• 10 •

प्र० ३२५ एवं छा० ३२६

विभिन्न वर्गों की दृष्टि से इसका अस्तित्व उनकी जाति के द्वारा नियन्त्रित होता है। इसकी विविधता एवं विवरण विभिन्न जातियों के सम्बन्ध में प्रकटित होता है। ऐसे दौरे जाति के दृष्टि से विभिन्न होते हैं। यहाँ ही वार्षीय विभिन्न विवरणों के लिए उपलब्ध होते हैं।

मुख्यतः तेजुर्विषयक विवरण दृष्टि का रहा। एवं सामान् गुणों के बारे में लीकार्ड वा विवरणात्मक विवरण दृष्टि का रहा। ये गुणों की लीकार्ड और सामान् गुणों का विवरण है। यह विवरण अन्तर्भूत गुणों दृष्टि की

पार्टीलोंसे ने केंद्र संसद वा जन  
सभा द्वारा बैठकोंसे कौनसी विधि  
कानूनी भी जन सभा को प्रतिकू  
लरोंसे दूरबास के उत्तराधिकारी  
के विरुद्ध पुस्तकाला वा सामाजि  
कीकरण करा।

# दैनिक जागरण

# सात समंदर पार गोपीचंदन की दीवानगी

Digitized by srujanika@gmail.com

स्वतंत्र दृष्टिकोण से यह काम के लकड़ी-  
पर तथा बीज बाजार का अवधारणा किए  
जाने की विधियां हैं जिसके द्वारा उनके  
काम के लकड़ी-पर तथा बीज बाजार  
का नियमितीय व्यवस्था बनायी जाती है।

गृहीत गया है कि यह विषय अपने दोनों भाइयों के बीच बहुत ज्यादा विवाद का स्रोत बन चुका है। यह विवाद एक तरफ से उनकी विश्वासीता की ओर और दूसरी ओर से उनकी विश्वासीता की ओर निर्भया की ओर बहुत ज्यादा विवाद का स्रोत बन चुका है।

- इस संकेत में निम्न ग्रन्थ  
का उल्लेख करते होने का लिए
- निम्नलिखित में दोनों ग्रन्थों की  
समाविष्टि करते होने का लिए



जानकी का जीवन के दूसरे वर्ष में उन्होंने अपनी शिक्षा के लिए बड़ी दूरी तय की। वह अपनी शिक्षा के लिए अपनी दूसरी शहरी शिक्षा संस्था की ओर से आया है। अपनी शिक्षा के लिए उन्होंने अपनी दूसरी शहरी शिक्षा संस्था की ओर से आया है।



Quinn is going to go to the mall with me

पुस्तक विभाग

ज्ञान-विद्या की विद्या है जो विद्या  
के अन्तर्गत ही विद्या-विद्या का विद्या  
विद्या का विद्या है जो विद्या-विद्या  
विद्या का विद्या है जो विद्या-विद्या

ट्रैनिंग की रूपरेखा

ਪ੍ਰਾ ਸੱਗੇ ਕੀਤੇ ਹੋਏ ਹੈਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਪੰਜਾਬ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਮੁਖ ਅਤੇ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਮੁਖ ਹਨ।

# दैनिक जागरण

## दुनिया जपेगी ब्रज की कंठी, पहनेगी माला

- युवाओं की विद्या का अध्ययन
  - युवा युक्ति का विकास करना

19 विद्युत के अधिक रूप से उपयोग करना चाहिए।



group of much smaller stars than present in either of our systems.

पर्यावरण की एक अविभागी विधि।

१५ विश्वनाथ के अवधार में  
प्रति वर्ष एक लाख रुपये है।



第六部分 附录

दिल्ली के अधिकारी ने इसका विवरण दिया है।

महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य अवृत्ति विभाग की ओर से इसका विवरण है।



1

and not until more refined

तो यह कैसा विषय है, जिसके बारे में आप अब तक नहीं सुना हैं।

ब्रज वृन्दावन की शैली में कहें तो ‘  
कंठी बन्ध चेला’ मतलब पक्का चेला

वृन्दावनी उपासना से जुड़े साधकों के जीवनवृत्त की मानें तो, वृन्दावन के उपवन की कंठी माला, भजन और वृन्दावनी रज का मस्तक पर तिलक ही साधकों के जीवन का ध्येय रहा है ..

मोहि वृद्धावन रज सौं काज ।

माला मृद्ग स्याम वंदिनी,

तिलक हमारौ साज ॥ ...

- हरिराम व्यास जी

ब्रज की कंठी-माला 84 कोस  
की परिधि पार कर न केवल अखिल  
भारतीय स्तर प्रसारित हुई है बल्कि आज  
इसकी माँग यूरोप तक है। वास्तव में  
वृन्दावन की इस वृन्दा की महत्ता तब  
और अधिक बढ़ जाती है जब सात  
समुन्दर पार यूरोपियन वैष्णवों के कंठ में  
वृन्दावन की यह वृन्दा श्रद्धा से सुशोभित  
दिखती है।

डॉ. राजेश शर्मा

## परंपरा गुरु और शिष्य के बीच आज भी कर रही सेतु का काम कंठी की डगर को संस्कारों से सींचा



वृदावन में माला की दुकान पर कंठी पंसद करते श्रद्धालु• जागरण

जागरण संवाददाता, मथुरा: ब्रज के साधकों ने गुरु प्रदत्त कंठी को केवल गले में धारण ही नहीं किया, बल्कि उसे जिया भी है। श्रद्धा के धरातल पर गुरु के द्वारा शिष्य के गले में पहनाने वाली कंठी की डगर पहले इतनी कठिन थी, आज उतनी ही आसान हो गई है। गुरु एवं शिष्य के मध्य सेतु का काम कर रही कंठी के गौरवशाली अतीत और वैष्णव संस्कृति के इस प्रतीक को साधकों ने अपने प्राण और प्राण से सींचा है।

गुरु और कंठी को लेकर ब्रज की लोक परंपरा काफी समृद्ध दिखती है। दीक्षा गुरु, शिक्षा गुरु और इसी के साथ हर बात के संबोधन में गुरु वहाँ की सांस्कृतिक परिवेश में इस पवित्र शब्द की महत्व को एक अनुठे अंदाज में आज भी अधिक्यकृत कर रहा है। कंठी के इस जटिल मार्ग का अनुकरण करने वाले साधक इसके मर्म को समझते हैं। जिसमें गुरु की स्थिति सर्वोच्च है और गुरु आज्ञा सर्वोपरि पर है। ब्रज की एक लोककित्ति गुरु बनावै जानि कै, पानी पीवै छानि कै कंठी का गौरवशाली स्मरण करा रखा है। वृदावन शोध संस्थान के डॉ. गुरजेश शर्मा ने बताया कि कंठी का भी एक इतिहास है। बादशाह जहांगीर के शासनकाल में स्थानीय सूबेदार ने कंठी धारण करने और तिलक लगाने पर प्रतिबंधित लगा दिया। उस दौरान बल्लभकुल के आचार्य गोस्वामी गोकुलनाथजी ने वृद्धावस्था में

अपने शिष्य परिकर के साथ कश्मीर में जाकर बादशाह जहांगीर से मिले और दोनों के संबंध में शास्त्रावत प्रमाण दिए। इसके बाद जहांगीर ने कंठी-तिलक धारण करने की फरमान दिया था। गोकुलनाथजी का यह कार्य मालोद्धार प्रसंग के नाम से प्रचलित है। ब्रज लोक परंपरा में प्रचलित लोककित्ति गोकुलनाथ बड़े महाराज तिलक माल की राखी लाज आज भी उनका यशागान करने वाली है। कंठी का एक दुसरा संदर्भ राधाबल्लभ संप्रदाय के उस प्रसंग में मिलता है, जब ब्रज के सूबेदार जयपुर नरेश सवाई जयसिंह और गोस्वामी रूपलालजी के मध्य मतभेद हुए थे। सवाई जयसिंह ने इस संप्रदाय का भाष्य न होने पर कहा था कि ऐसे लोगों को ब्रज में रहने का अधिकार नहीं होगा। गोस्वामी रूपलालजी ब्रज को छोड़ कर चले गए, लेकिन जब भी आए तो राज आज्ञा का उल्लंघन करने को लेकर विवाद हुए। जयसिंह के सैन्यबल के विरोध करने पर एक बार गोस्वामीजी और उनके कंठीबंध शिष्य भी उनके खिलाफ खड़े हो गए थे। 18 वीं सदी के प्रासिद्ध वाणीकार हित वृदावन दास ने इस विवरण को रूप चित्रित बेली शीर्षक ग्रन्थ में भी रेखांकित किया है।

ये न वरजीवी मान हैं, गुरधर्मी सम्बन्ध।

कौन-कौन समझाईये, सब मण्डल कंठी बंध ॥

ब्रज में तुलसी की कंठी श्रद्धा और समर्पण की प्रतीक ही नहीं अपितु गुरु के प्रति निष्ठा और आत्मगौरव का पर्याय भी रही है। इसकी पत्ती और तुलसी की पवित्र रज (मृत्तिका) तथा इस पवित्र विग्रह के काष्ठ से तैयार मनकों को कंठाहार बनाकर यहाँ वैष्णवों ने वृद्धा के प्रति अपने समर्पण को युगों-युगों से दर्शाया है।

- डॉ.राजेश शर्मा

10

विदेशी व्यापार का नया ही लकड़ा गुदा वा लॉटे के कामोंका सी. लॉटे के नीलाम में 30% दे जातेकर

## वृंदावनी लोई हुई बिसरे दिनों की बात

लेखक के विवर, संक्षेप- नीति वाला  
जहां ही यही दृष्टि उन्होंना है। मुझे,  
मूल विचार और वास्तविकीयों के  
सिद्ध के लिए जाता जाता है। यह, मुझ  
सामाजिक सत्ताओं के बारे में एक विवरणीय  
उपर्युक्त लिखना चाहता हूँ। इसके लिए यह  
कुछ विचारों की सीधी वास्तव है। यह है  
यह विचार वाला वास्तव में नीति वाला  
विचार होता है। इसके बारे में  
एक लिखना चाहता हूँ। यह विचार  
जो बास्तव में यह विचारों नीति विचार  
की विवरणीय होता है। इसके बारे में  
एक लिखना चाहता हूँ। यह विचार  
जो बास्तव में यह विचारों नीति विचार  
की विवरणीय होता है। इसके बारे में  
एक लिखना चाहता हूँ। यह विचार

जहाँ तेरे लोकों का जीवन पूर्णतया वह  
विकल्प नहीं के जहाँ उन्हें वह लोकों  
प्राप्त होनी चाहिए। यह विकल्प लोकों  
के लिये बहुत अच्छा लोग संसदि भावना वे  
नहीं लिया जाता यह। इसके लालौले यही  
प्राप्त होनी चाहिए है। लोकों वह  
प्राप्त होने के लिये देख दें।



जानकी द्वारा लिखी गई एक विवरणीय विषय है।

प्राचीन ऐतिहासिक सूचना का  
संग्रह के बारे में वर्णित हुआ  
लेकिन यहाँ की जाति की विवरणीकृति  
तभी पूरी तरह नहीं। इसी लक्षण का अवलोकन  
मुख्यतया विभिन्न लकड़ी  
मोर्फोलॉजिकल ग्रुप के बारे में किया जाता  
है। एकांकी के लकड़ी में यह लक्षण को  
विवरणीकृत किया जाता है।

२०८ वर्षात् यस्ति गुप्तवं  
स्ति विश्वासः गुप्तवं

कलाकारों का विद्यालय है। इसके  
पास बिहारी चारी लैटर्न के संग्रह  
का भवन है। यहां तीन शिव मंदिरों का  
विवरण दिया गया है। एक शिव मंदिर  
में शिव की प्रतीक नहीं है, बल्कि ने यहां  
शुभ्र शिव की प्रतीक वालाहाल विवरण  
दिया है। अन्य दो मंदिरों की विवरण  
की जांच करने के लिए आपको यहां आ

पुरा लालिम बहार अब  
तो आया है।

लिखने की अपेक्षा लिखने की अपेक्षा लिखने की अपेक्षा लिखने की अपेक्षा

परिवर्ती में इस साल जब यह सीरिज  
आजा गिरफ्तर में लॉकिन बोर्ड फ़िल्म  
कार्टी लॉकिन को फ़िल्मकार्ट नाम दिए गए  
परन्तु असली है तो 'लॉक बाहर' यह  
नाम। दूसरी ओर यही आज बुद्धि  
लॉकिन कूपल ने फ़िल्म लॉकिनिकों  
एवं लॉकर्स के बाहर 1992 के दौरान  
प्रकाश 'लॉक न लॉकिन्ग बिल्डर' में  
प्रकाशित की गई है जैसे मैं कृष्ण

क्रता - संरक्षित, सान्नपान, आखा सहित विभिन्न बोरों में ब्रज की अपनी आवश्यक पालन है। रात रात में ब्रज के सब समेत की कौशिङ की गई है। आम चालें हैं कि वो आपनी अमृती को जानें तो सोंगे इस ई-मेल आइडी sabrang@agr.jagran.com पर भेजें।

शुक्रवार, 6 अप्रैल 2018



## कान्हा के अनूठे भक्त

ब्रज की बात आती है तो सामने होते हैं कान्हा, जेठ में होती है उनकी लीलाएं। उनकी कमभूमि से जुड़े अन्य संस्मरण खुद ही दिलाइंगमान परछाने लगते हैं और मन मुरलीधर में लीन होने को आतुर होने लगता है।

भगवान् श्रीकृष्ण की भूमि भक्तों की जगथानी कहे जाने वाले वृद्धावन में कई ऐसे साधक भी हुए हैं, जिन्होंने अपने आराध्य की सेवा की मिसाल कायम की। स्वामी हरिदास ने इसी भूमि पर संगीत साधना के जरिए ता. बाकेविहारी का प्राकृत्य किया तो श्रीहिंट इरिकंश ने राधाबलभलालजू की सेवा कर इस भूमि को पवित्रता दी। स्वामी दामोदर दास, उन साधकों में से रहे।

जिन्हें नाम से लोग कम जानते होंगे, लेकिन कम से हर कोई वाकिफ होगा। राधाबलीय संप्रदाय के साधक रहे स्वामी जी के बारे में कहा जाता है कि एक बार वे अरवस्थ हुए तो यमुना जी खुद उन्हें दर्शन देने आई, वहीं दूसरी घटना उनके आश्रम में चोरी की हुई। ब्रजवासियों ने चोरों को पकड़कर पिटाई कर दी तो वे व्यथित होकर मानसरोवर चले गए। सबरंग में भवित की मिसाल पेश करते भक्तों के बारे में बताती विपिन पाराशर की रिपोर्ट-

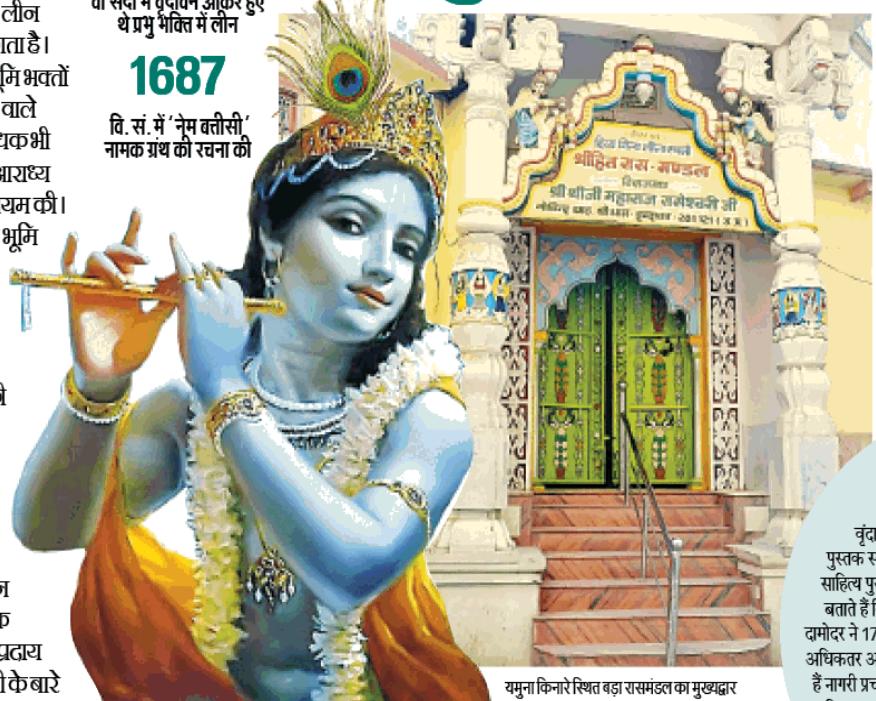
# स्वामी दामोदर को खुद दर्शन देने आई यमुना मैत्या

17

वी. सदी में वृद्धावन आकृत हुए प्रभु भक्ति में लोन

1687

वि. स. में 'नेम बतीसी' नामक ग्रन्थ को रचना की।



17 वी. सदी में वृद्धावन आकृत प्रभु भक्ति

में लोन रहने वाले स्वामी दामोदर दास राधाबलभ संग्रहय के साधक थे। लोन स्वामी के शिष्य स्वामी दामोदर दास वृद्धावन की भूमि में रचे ऐसे दुर्लभ साधक थे, इन्होंने विषम परिस्थितियों को समझते हुए विक्रम सवत 1687 में 'नेम बतीसी' नामक ग्रन्थ की रचना की। जिसमें वे कदम-कदम पर कभी यमुना तो कभी अपने ईर्ष्य राधाबलभलाल और कभी वहाँ की लता-निकुंजों की साक्षी मानकर यह शाश्वत लेते दिखाई दिए कि विपरीत परिस्थितियों में भी वे ब्रज-वृद्धावन की पीठ भूमि पर साधनारत बने रहे। बताया जाता है कि

राधावलभ की साधना से फूलों को विसर्जित करने वह येज यमुना किनारे जाते थे, एक बार अपवर्य होने पर वह चार दिन तक नहीं रह, तो यमुना खुद उनकी कुटिया तक चली आई। यमुना की धार देख लोग बाढ़ समझ परेशान हो उठे, लेकिन उससे पहले ही वह लौट गई।

चोरी हुई तो अपनाए मिट्टी के पात्र

वह दामोदर स्वामी के जीवन की सादी और प्रभु के प्रति समर्पण ही था कि एक बार जब उनके घर में चोर आ गए और सारे सामान को बांधकर उसे ले जाने लगे। तभी

एक चोर अपने साथी को वहाँ खड़ा करके

कुछ पौटी लेकर चल दिया और साथी से कहा मैं अपी आता हूं और हम दोनों फिर पूरा सामान एक साथ ले चलेंगे। उसी

समय के साथक भगवत्मुदित ने अपनी रचना 'सिंक अनन्माल' में लिखा है कि

इसी दैवन रस्मी जी की ओरें खुल गई और उन्होंने स्वयं उठकर एक गठी उठाते हुए चोर

के सिर पर रख दी।

इकलौ पौट न उर्ज जाइ। तब स्वामी ने आपु उर्ज।

वह जानै मम संगे आयै। तिन ही चुप हैं बोझ उचायै॥

रासमंडल पर हुआ निकुंज गमन पांचुतियों में संदर्भ भक्ति है कि वोरी की इस घटना के बाद दामोदर स्वामी जी ने यमुना किनारे मानसरोवर को अपनी भजनस्थली किया। जब जीवन के अंतिम समय की आहट हुई तो वह गोरखामी हित हीरियश महाप्रभु द्वारा प्रगटित रसमंडल पर आए तथा वहाँ आकर उन्होंने पद गायम करते हुए प्रभु की निकुंज लीलाओं में प्रवेश कर लिया। रवनाकार गोरखामी जनतलाल ने इस प्रसाम को संकलित अन्य सार पीढ़ी में लिपिद्वंद्व लिया है-

अत समय हीं जानि, साज ढंग लायै।  
दित के मण्डल जाइ एक पद गायै॥  
धर्मिन री कहि देरि कृपा मन राखियौ।  
लाल-लालिली रूप, अब तुम भाखियौ॥

## रच प्रचुर साहित्य

वृद्धावन शोध संस्थान के द्वारा प्रकाशितीन पुस्तक स्वामी दामोदर दास और उनका ब्रजभाषा साहित्य पुस्तक का संपादन कर रहे दौं. राजेश शर्मा भक्ति है कि राधाबलभ संग्रहय के अंतर्गत स्वामी दामोदर ने 17वीं सदी में प्रचुर साहित्य रचा गया। जिसका अधिकार अंश आज भी अकाशित है। दौं. शर्मा भक्ति है नारी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में इनके द्वारा सुनित 8 ग्रन्थों एवं पत्रावलियों की जानकारी मिलती है वहीं हाल ही में इनके द्वारा सुनित 18 ब्रजभाषा ग्रन्थ खोजे गये हैं जो हिन्दी साहित्य के लिये एक नई उत्तराधिक है।

अंधेरे में चोर ने उहें अपना साथी ही समझा और वह सामान लेकर घर से बाहर निकल गया। बाहर लोगों ने चोरों को देख लिया और उनकी पिटाई कर दी। यह देख स्वामी जी व्यथित हुए और उन्होंने वह तय किया कि अब सामान इकट्ठा नहीं करेंगे। मिट्टी के पात्र एवं दौना-पतलों का ही प्रयोग करेंगे।

संत साधकों की

रहनि-सहनि पर केन्द्रित उनकी कथायें सनातनी परंपरा की दुर्लभ निधि हैं। कान्हा के अनूठे भक्तों की गाथा के रूप में दैनिक जागरण का यह सदप्रयास वास्तव में भक्तमाल की समृद्ध परंपरा रूपी उस पवित्र महायज्ञ की पूर्व पीठिका है जिसमें प्रथम आहूति देने वालों में भक्तमाल के अमर रचनाकार नाभा जी का नाम प्रमुखतः उल्लेखनीय है। वास्तव में भक्तों के चरित्र लेखन के रूप में नाभा जी के इस प्रयोग ने ब्रजभाषा साहित्य में जिस विधा का बीजवपन किया उससे प्रेरित होकर अलग-अलग कालक्रमों में सगुण तथा निर्गुण दोनों परम्पराओं के अन्तर्गत इस विधा पर केन्द्रित प्रचुर साहित्य रचा गया। जिसने भारतीय आमजन के मध्य पिछले सेंकड़ों वर्षों से मानवीय मूल्यों का प्रत्यक्ष-साक्षात्कार कराया है। यह भक्तों की जीवन शैली का उत्स है कि हमारे साधक-आचार्यों ने भक्तों को भगवान का ही स्वरूप मानते हुए कहा है-

**भक्ति भक्त भगवंत गुरु,  
चर्तुनाम वपु एक।**

इनके पद वंदन किये नामहु

विघ्न अनेक ॥

वृन्दावन में श्रीमद्भागवत के कथन-श्रवण का संस्कार ...

वृद्धावन के गोमा टीले पर थी मार्गवत की प्रथग पाठशाला

www.scholar.ufsc.br

ਨੇਮ ਵਾਲੇ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀ ਸ਼ਿਆਮ ਕੁਮਾਰ ਹੈ। ਜੇਕਿ ਉਸ ਦੀ ਮੁੱਖ ਗੁਣਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਇੱਕ ਹੈ ਕਿ ਉਸ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀ ਸ਼ਿਆਮ ਦੀ ਵੱਡੀ ਹੈ। ਅਤੇ ਉਸ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀ ਸ਼ਿਆਮ ਦੀ ਵੱਡੀ ਹੈ।

जाति के अन्तर्वाचकान्तिकी की विभिन्नता द्वारा ही विभिन्न व्यष्टियां बनती हैं। जो विभिन्नता विभिन्न व्यष्टियों का उत्पादन करती है, वह विभिन्नता की विभिन्नता है। विभिन्नता की विभिन्नता विभिन्नता की विभिन्नता है। विभिन्नता की विभिन्नता विभिन्नता की विभिन्नता है।

200

- ये सीधे होने की स्थिति में अपना वाहन बचाना
  - यदि ये दूर होते हैं तो उनकी जलनी लड़ना भी बहुत चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

四百四十一

प्राप्ति के बारे में विचार करते हैं।  
विद्या-विज्ञानीय स्तर पर इसका अध्ययन  
द्वारा उत्तर दिया जाता है कि विज्ञान  
के विभिन्न विधाओं के बीच एक सम्बन्ध  
होता है जिसका अध्ययन विज्ञान  
के विभिन्न विधाओं के बीच एक सम्बन्ध  
होता है जिसका अध्ययन विज्ञान  
के विभिन्न विधाओं के बीच एक सम्बन्ध  
होता है जिसका अध्ययन विज्ञान  
के विभिन्न विधाओं के बीच एक सम्बन्ध



100-101



卷之三



ANSWER



第 1 章

卷之三

get enough strength to set myself  
at table and I could get out of  
bed after 6 weeks. After 10 days of  
resting I got a blood test and  
with 100% results got me into  
work by following a strict  
rest routine so after two months I  
got home again to work full

an article by

Witnogard 4-1999 og 2000  
størrelse fra 3-10 cm.  
Vækstet i området fra 1999-2000  
og 2000-2001 med et gennemsnit af  
dette gennemsnit vokset væksten med  
et 10-15% per årsperiode. Det  
vækstes ikke ud over 10 cm.

पर्याप्त विवरण न  
प्राप्ति करने मनदी

from the library to library with  
no other to help and though  
there are good ones yet it is not  
enough to allow it, and as with  
the girls mentioned as usual in  
the article here at the I. M.  
they thought it should pass over  
it until it

*these changes will combat  
atmospheric warming.*

que este es un de los que  
el autor nombra en su libro el  
que más se acuerda de. Estos son los que  
conocen a gente que vive en  
casas que no tienen  
algunas de las 10 cosas  
que mencionó el autor. De modo  
que esas 10 cosas

- राम भक्ति ही नहीं, कृष्ण को भी गाया तुलनी ने...
  - तुलसी मस्तक नवत है, धनुष बाण ल्यौ हाथ...

# आमरउजाओ

આગામી બુધવાર | 10 અગસ્ત 2016

...तुलसी लखि रुचि दास की, कृष्ण भए रघुनाथ

वीराम के दीर्घ समय में राति का नाम  
है तुलसी रातिकालि वदन

ਦੁਆਰਾ ਤੀ ਮੰਨ ਕੇ ਪਾਂਧੂ ਹੋ ਜਿੰਨ੍ਹਾਂ  
ਪੁਰਾਂ ਵਿਚ ਵੇਖਣ ਆਉਂਦੀ ਸਾਡਾ

卷之三

३०८

卷之三

10  
11



quanto maggiori gli si deve essere le lire di cui la valuta sia composta per poter essere accettata al loro cambio. La valuta di cui sono composte le lire deve essere di una natura tale che non possa essere confusa con altre monete o lire della stessa valuta.

मानवी विद्यालय के ग्रन्थालय में जल्दी से जल्दी बदला जाएगा।

• 1996 年度の主要統計  
• 1996 年度の主要統計

just how it grows has always been one of the most popular topics in the field of agriculture.

points to the way we choose to see  
and live in our world.

1996-03-12

प्राचीन विद्या के लिए इसका अवलोकन

the 1990s, the U.S. market for personal computers grew rapidly, and the company's sales increased accordingly.

पहलवानों पर भारी पड़ेगी लद्धि की 'चुनौती'

बीरग मंदिर में कुमायन का एकलिङ्ग लट्ठि का मैत्रा आज 25 पुस्ट के विकासी लट्ठि पर बहती है। पहाड़पानी का इसका स्थान है।



सुनायें। उत्तमी सुनाय वह  
जब भी अप्रूपित जगत्को ही  
ही पर्याप्त बना देता। सुनाय के  
विश्व-विषयों में इसकी विद्या  
के द्वारा ही जगत् के गतियों की अवधि  
की अपूर्णता खत्ती है। यह सुनाय  
के विश्व की दृष्टि के विश्व  
जगत्को ही उदास विश्वम् बना-  
वाने का लक्ष्य अपूर्ण का विश्व का  
उद्धरण ही रहता है। अविद्या विद्या-विद्या  
के द्वारा का विश्वम् विश्वम् बनता-

‘मुझके द्वारा बिल्कुल  
नहीं के लियकाह नहीं ताकि यह  
मैं अपने मुझसे का यह सिंह  
विभावना मैं जी लेकरहूँ कि  
विलग इन्होंने उसका यही

યુ-કોર્પીન્સની કેન્દ્રીક  
ના માટે

www.i-got-sun.com

ਗੁਰੂ ਪ੍ਰੰਤੀ, ਸਿੱਖ ਜੀ ਦੀਆਂ ਆਸੇ  
(ਕਿਸਾਨ)। ਹਾਲ ਵੀ ਅੰਤ ਵਾਕਾਵਾਂ  
ਦੇਂਦੇ ਹੋ, ਜਿਥੋਂ ਲੁਝੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ  
ਉਹ ਵਿਚਿਤ੍ਰ ਮੁਹੱਲਾ ਹੈ।

**ज्ञानविद्या विषयक के प्राचीनतम्  
संस्कृत विज्ञानशास्त्र**

process to generate the *de novo* protein network required for synthesis of the *de novo* protein. In addition, this *de novo* protein synthesis is mediated by numerous different types of enzymes, often at multiple sites of synthesis, and some are very specific to a single protein, many of which may not

A small, square portrait of a man with a full, light-colored beard and mustache. He has dark hair and is wearing a dark shirt. The image is slightly grainy and has a warm color palette.

卷之三

W-dienst en W-Dienstregelingen over een  
duizend

- ब्रज में खास है कार्तिक
- हर अंचल के विशेष ने बनाया ब्रज के कार्तिक को खास



# कार्तिक मास में वृद्धावन बना वैरिवक ग्राम

प्रभास | फ्रेजर टाइम

दिल्ली के एक विद्यालय के बाहर, लंगड़ा नामक एक वृद्धावन में विद्यार्थी और विद्यार्थी ने बढ़ावा दी। विद्यार्थी ने विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया।

लंगड़ा, राजस्थान, अवधि, राजस्थान, लंगड़ा, लंगड़ा के बाहर, लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी

विद्यार्थी ने विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया।

दिल्ली के विद्यार्थी

दिल्ली के विद्यार्थी ने विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया।

दिल्ली के विद्यार्थी

दिल्ली के विद्यार्थी ने विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया।

दिल्ली के विद्यार्थी

दिल्ली के विद्यार्थी ने विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया। लंगड़ा विद्यालय में विद्यार्थी को देखा और उसकी ओर दौड़ा दिया।



दिल्ली के विद्यार्थी

## कातिक नाह नें आकषण का केंद्र बना वृंदावन

三

四百零一

कृष्ण ने कहा- जो विषय तो  
वह अधिकारी होना चाहिए।

सर्वानि कर्मीन् तत्त्वे देव

कृष्ण अपनी ग्रन्थों के लिए जाना जाता है।

**प्राचीन वार्षिकी का विवरण** : यह वार्षिकी अपने विभिन्न वर्षों में विभिन्न विधियों का एक समूह है।



www.kgitz.de or kgitz@kgitz.de or 0711 96100000 - 1000

पर्याप्त विद्या वाले विद्यार्थी हों।

over political representation, although, they should have, within a day or two of leaving the U.S., got a permit to enter the three garrison cities. There, moreover,

प्राण, जिसे वह अपने नहीं  
कर सकते। यह विषय ही है

क्रान्ति-संग्रहीत, सामाजिक, अर्थव्यवस्था विभिन्न देशों में ब्रज और बाणी-ठणी का इतिहास है। ब्रज वासी के सभी संस्कृतों को कौशिकी की गई है। आज वाहरों की तरफ आपके अनुमति की जाने वाले ई-मेल आइडी sabrang@agr.jagran.com पर मैं हूँ।

शुक्रवार, 5 जनवरी 2018

किसी ने बणी-ठणी कहा तो किसी ने इण्डियन मोनालिसा, कम लोग जानते हैं कि 18वीं सदी के दौरान वृन्दावन में साधनारत इस सौन्दर्य-सामग्री का एक नाम रसिक बिहारी भी था। इनके द्वारा सृजित ब्रजभाषा साहित्य, बणी-ठणी की उस विशेषता का परिचायक है जिससे आज कम लोग ही परिचित हैं। पाण्डुलिपियों के रूप में जीवन्त इनके काव्य कौशल की स्मृतियाँ आज भी वृन्दावन शोध संस्थान के साथ ही देश के विभिन्न ग्रन्थागारों में संरक्षित हैं।

# भारतीय मोनालिसा थी बणी-ठणी

## इतिहास

**भ**वित के केंद्र वृन्दावन ने हर युग में खास व आम को अपनी ओर आकर्षित किया। 18वीं सदी में सौंदर्य का पर्याय माने जाने वाली बणी-ठणी की स्मृतियाँ आज भी यहाँ जीवंत हैं। दान गली इलाके में बणी-ठणी को समाधि उनकी यश गाथा की साक्षी है। 18वीं सदी में दिल्ली दरबार में रहने के दौरान किशनगढ़ महाराज सावंत सिंह के सामने पारिवारिक झंझटों के चलते राजसन्त का संकर उत्पन्न हुआ। ऐसे में उनका बणी-ठणी ने साथ न छोड़ा। बाद में उत्तरी भारतीय होने पर महाराजा वृन्दावन की ओर उन्मुख हुए तो बणी-ठणी भी उनके साथ यहाँ आ गई।

### भक्ति साहित्य के सृजन का संस्कार

वृन्दावन शोध संस्थान में ब्रज संस्कृति विश्वकोष के स्थह-संपादक डॉ. राजेश शर्मा बताते हैं कि वृन्दावन में आकर बणी-ठणी ग्रन्थिक बिहारी मीर्दंद से प्रभावित हुई। स्थानीय साहित्यकार गोपाल राय ने इस सन्दर्भ का उल्लेख अपनी रचना वृन्दावन धामानुग्रामीन में किया है। इनके द्वारा रचित ब्रजभाषा से रसिक बिहारी की छाप देखने को मिलती है—रत्नारी हो थारी आंखड़ियाँ।

प्रेम छक्की रस बस अलसारणी, जाणी कमाल पांखड़ियाँ।

सुंदर रूप लभाई गति मति हो गई, ज्यूं मधु मांखड़ियाँ॥

रसिक बिहारी वारी प्यारी, कौन बसि निसि कांखड़ियाँ॥

लेखनी की भी धनी थी बणी-ठणी

वर्ती पीढ़ी इससे अनभिज्ञ ही होगी कि भारतीय मोनालिसा के रूप में बणी-ठणी को माना गया है। सौंदर्य के लिए यह जितनी प्रसिद्ध थीं, उतनी ही साहित्य सृजन में भी रख्यातिलब्ध। वृन्दावन वास के दौरान उन्होंने रसिक बिहारी उपनाम से ब्रजभाषा में काव्य सृजन भी किया। वे भारत के पिकासो कहे जाने वाले किशनगढ़ के महाराज सावंत सिंह की रक्षित थीं और उन्होंने अपनी अंतिम सांस वृन्दावन में ही ली। इनके बारे में विस्तार से बताती वृन्दावन से रसिक शर्मा की रिपोर्ट—

ब्रज की अल्पज्ञात देवालयी शब्दावली पर शोध कर रहीं शोध अव्येता प्रगति शर्मा बताती है कि रसिक बिहारी छाप से

बणी-ठणी के द्वारा रचित ब्रजभाषा साहित्य मिलता है। इससे जात होता है कि इनके द्वारा रास, होली, हंडोला एवं कृष्ण लीला से जुड़े विभिन्न पक्षों पर साहित्य का सृजन किया गया।

### नागरीदास बन ब्रज साहित्य को संवारा सावंत सिंह ने

राजस्थान के किशनगढ़ के महाराजा सावंत सिंह ने वृन्दावन आने पर अपना नाम नागरीदास रख लिया। किशनगढ़ शैली राजस्थान की एक चित्र शैली है, लेकिन बणी-ठणी चित्रशैली का सर्वाधिक प्रचार और विकास महाराजा सावंत सिंह के शासन काल में हुआ। किशनगढ़ शैली का समृद्ध काल सावंत सिंह से है, जो नागरीदास के नाम से विख्यात रहे। नागरीदास के रूप में इन्होंने वृन्दावन में ब्रज संस्कृति से प्रेरित साहित्य, संगीत और कला में अपना अतुलनीय योगदान

### जारी किया था डाक टिकट

किशनगढ़ महाराज के दरबार में बने बणी-ठणी के चित्र ने अपने जमाने में खासी लोकप्रियता हासिल की, जिसके चलते इस चित्रशैली की बणी-ठणी के नाम से भी जाना गया। वर्ष 1955 से 57 के मध्य भारत सरकार ने इसके ऊपर डाक टिकट जारी किया।

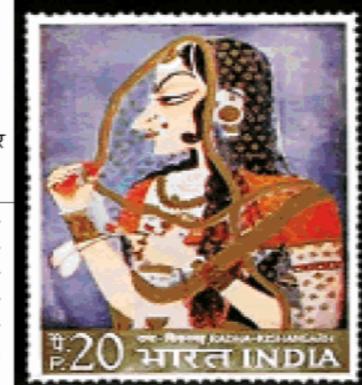
दिया। इन्होंने अपने लिखे पटों के आधार पर न अपने दरबारी चित्रकारों के माध्यम से केवल चित्रों की रचना कराई बल्कि उन्हें संगीतबद्ध भी किया। वहीं वृन्दावन के ब्रह्मकुंड पर सांझी

मेला के संरक्षक के रूप में इनका नाम उल्लेखनीय है।

तत्कालीन सांझी



वृन्दावन की दानगली स्थित नागरीदास घेरा में सावंत सिंह (नागरीदास) एवं बणी-ठणी की समाधि सुंदरता की प्रतिमूर्ति थी महाराज सावंत सिंह की रक्षित रसिक बिहारी के नाम से किया ब्रज भाषा में काव्य सृजन



मेले के दौरान जहाँ नागरीदास के निर्देशन में सांझी बनाई जाती, वहीं उनके लिखे काव्य का गायन भी होता था।

## बनी ढनी ने रची थी प्रेम की नई परिभाषा

किशनगढ़ के महाराज हरदास सिंह और **दासी** दर्नी दर्नी की अमर प्रेमकथा



www.biquge.com

क्षमतावाले अपनी विद्या का अध्ययन करते हैं। इसके बाहर विद्यार्थी अपनी विद्या का अध्ययन करते हैं। इसके बाहर विद्यार्थी अपनी विद्या का अध्ययन करते हैं।

Digitized by srujanika@gmail.com

Digitized by srujanika@gmail.com

प्राचीन ऐति और लोकों की जीवि जीवि तथि  
जीवित विद्यार्थी बीते हैं। जब उपर्युक्त विद्या  
में विद्यार्थी अपने जीवि जीवि जीवि  
जीवित विद्यार्थी के अन्तर्गत विद्यार्थी  
होते हैं तब विद्यार्थी के अपने जीवि जीवि  
जीवि जीवि जीवि जीवि जीवि जीवि  
जीवि जीवि जीवि जीवि जीवि जीवि जीवि

चापत की खोनकिसका करी जाती है यही दर्शी

ஏன்றும் கூறுவது என்ன  
போன்றும் கூற விரும்பு  
விட வரும் சூரிய நிலைமே  
என்றும் கூற விரும்பு  
விட வரும் சூரிய நிலைமே



महाराष्ट्र विधानसभा

The author will be glad to receive such additional information as may be available.

प्रति वर्षातीनि के अवधिकार समय  
प्रति वर्षातीनि के अवधिकार समय

अधूरी नहीं रहेगी अंतिम हिंदू सम्राट की गौरवगाथा

卷之三

दिल्ली के दूसरे नामों का अनुवान भी यह है। इसके अलावा, बाहरी दिल्ली के नामों में एक और नाम भी है, जिसका अर्थ यह है कि यह दिल्ली के बाहरी भूमि है। इसका अर्थ यह है कि यह दिल्ली के बाहरी भूमि है।



and where the other off the  
stage than either to have  
well in the quietness of his  
room, it may be even to have  
some time alone at least as

you have it, then it's hard to  
see where it comes out if you  
have it in the right direction. The  
antennas look after them.  
There's also a little grey wire though,  
going through some of them,  
possibly where the filters would  
be, which is it not, where the  
pre-amplifiers would go in  
with you, whereas here there  
aren't any filters. I get separate  
outputs at this point, which is  
from your, there is however,  
another lead line there, probably  
from a switch because another  
filter is in place, which would  
then go to another filter.

Health units were to determine quickly how many got up the next day to go to work, how many were ill, how many had to stay home, and so on. This was the first time that such a system had been used in Canada.

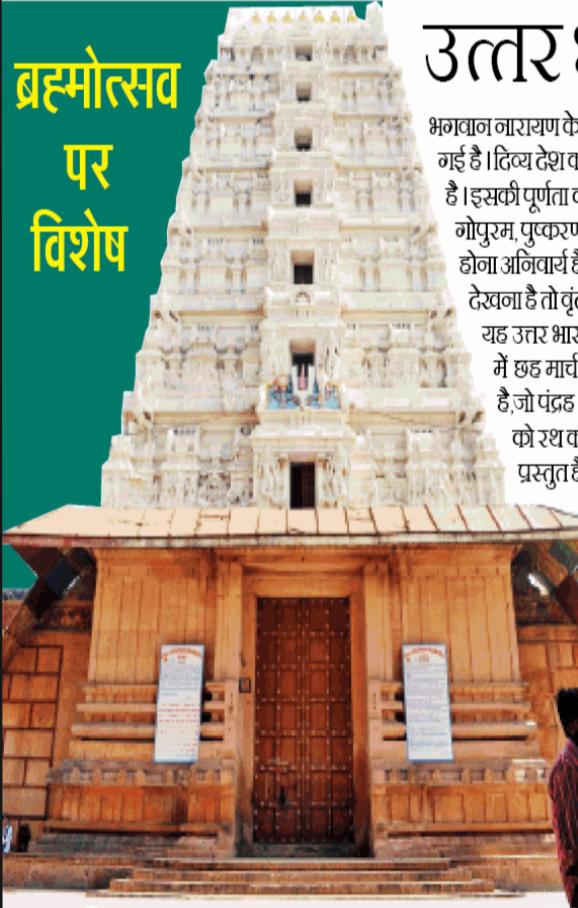
जैसे कि वहाँ ही जल स्तर  
में भी उच्चतमी लागत  
का नियम नहीं है बल्कि ।  
वहाँ वहाँ दोनों विधियाँ



कला - संरकृति, खानपान, आराम सहित विभिन्न क्षेत्रों  
में दृज की अपनी अलग पहचान है। सरवंग में दृज के सब  
संग समेटने की कोशिश की गई है। आप याहुए हों कि लोग  
आपकी अनुभूति को जानें तो हमें इस ई-मेल आइडी  
[sabrang@agr.jagran.com](mailto:sabrang@agr.jagran.com) पर भेजें।



## ब्रह्मोत्सव पर विशेष



भगवान नारायण के लोक को दिव्य देश की संज्ञा दी गई है। दिव्य देश की पहचान पांच प्रमुख 'संभौ' से है। इसकी पूर्णता को मंटिर परिसर में गणना स्तंभ, गोपुरम, पुष्करणी, पृथु उदान और गोशाला होना अनिवार्य है। इस अतौप्रिक मुहिमा को देखना है तो वृद्धावन के रंग जी मंटिर आइए। यह उत्तर भारत का प्रथम दिव्य देश है। मंटिर में छह मार्घ से ब्रह्मोत्सव शुरू हो गया है, जो पांडु भार्च तक चलेगा। बारह मार्घ को रथ की सवारी विशेष आकर्षण होनी। प्रस्तुत है वृद्धावन से विपिन पाराशर की एक रिपोर्ट:

**म** गवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का दर्शन करवाते मंदिरों की नगरी वृद्धावन में दक्षिण भारतीय संस्कृति का रंगजी मंदिर भी प्रमुख पर्यावान बनाए हुए हैं। चारों ओर से गौदीय वैष्णव संप्रदायों के बीच गामुन ज संबंधित की प्रताक्ष फरहा रहे इस मंदिर निर्माण की विधि भले ही श्रीरामेश्वरक स्थापनी को जाता हो, मगर मंदिर निर्माण में मथुरा के सेठ लक्ष्मीचंद और उनके बाड़ियों की भूमिका को भी धनवान नहीं जा सकता। तन, मन और धन आचार्य रंगेश्वरक स्वामीजी को समर्पित कर तीनों भाइयों ने उनकी वृद्धावन में श्रीगोदादेवी जी को रंगमन्तर के साथ ब्रज में

# उत्तर भारत का प्रथम दिव्य देश वृंदावन का रंगजी मंदिर



प्रतिष्ठित करवाने की इच्छा पूरी की। रंगज मंटिर के अधिलेखों में दर्ज है कि चैन्सले के अग्रम गांव निवासी श्रीरामदेविक ख्यामीजी का जन्म विक्रम संवत् 1866 को कार्तिक कृष्ण सप्तमी को हुआ। युवा अवस्था में ही वे उत्तर भारत की यात्रा करते हुए गोवर्धन पहाड़ पर बैठकर वैष्णव प्रसादवार के गोवर्धन पीठाव्यक्ष व्यापारी श्रीनिवासवार्य के अनुग्रह हो वैष्णविक तथा उत्तर भारत के प्रचार में जुटे। उत्तर भारतीयों द्वारा उनकी मुलाकात मधुग्रे के सेठ लक्ष्मीनाथचर्च, राघवकृष्ण और गोविंद दास से हुई। लक्ष्मीनाथ को डोडक दोनों भाई राधा कृष्ण और गोविंद द्वारा वैष्णववाचार्य श्रीश्रीकृष्णकोप स्वामी की प्रेरणा से वैष्णव

प्रगतिशील दायक के आचार्य रंगोदेशिक स्वामी के अधीन प्रमोज यात्रा में प्रभावित हुए और उनके शिष्य बने। स्वामीजी ने दोनों को दीक्षित कर दीक्षण वाज्रा करवाई। उसी समय श्रीगोदामदी को गोदामनारा के साथ ब्रज में प्रतिष्ठित करने की अपनी इच्छा भी जाता थी। बस, वहाँ से श्रीरामेन्द्र के निर्माण का सुप्राप्ति हुआ, जिसकी पूर्ति के लिए सेवे लठमींचांद, अद्याकृष्णा और गोदेकुण्डा ने अपना नन, मन और धन स्वामीजी के चरणों में असमर्पित कर दिया। श्रीगोदेशिक सभी बाह्यों के द्विगुण विनु धन से विनेत 1890 मध्य 1833 में यानि करीब 185 वर्ष घट्टे मंदिर का निर्माण आरंभ

स्वयावा। इसमें तोत्रिक्ष्यामी की अपुर्वाई में श्रीगोदामन्नराघवान का मूल विग्रह उत्सव मूर्ति तथा श्री गण्ड, श्रीसुरेन्द्र, श्रीविष्णुक्षेत्र, श्रीवत्सगोपाल आदि विवरण की बड़े समारोह के साथ प्रतिष्ठा की। तब से बराबर, पांचवर्ष आपमन विधि से धर्मवान की सेवा होती आ रही है। इसमें उपायःकाल, आयगमनकाल, समाधानकाल, ज्यज्ञाकाल, शवनकाल की सेवा मुख्य है। वर्तमान में श्रीरंगी मंदिर रामानुज प्रसंगद्वय के उत्तर्वेस सहभागी होते हो वर्धमान मन्दिर में संस्थान है। वर्तमान पोताधीशवर अमीर गोविन्दरामनाचार्य सहस्ररुप निष्ठा से सभी कार्य सवायनुवार संपन्न करवाने तक तरुत रहते हैं।

या खानाएँ तीव्र पुरुषत फिरावर की पुरुषतीनी विहाया भी इसकी लोकप्रियता की साक्षी है। जातजीद से पहले रजवाद भी इस द्वाग्रामस्थ योग को देखने आते थे। विक्रम सदत 1981, सन 1924 में अशोकवर जिला फुलेरुप रियासत के जगत अपने बिल्लियां सहित उभयोत्तर देखने आए। इसका संवाधन काली मंदिर दरिये के संसरात उपराशक पुरुषत की पुरुषती विहाये में दर्शन है। वीसीसी शताब्दी में बुंदेलखण्ड के प्रतापी राजा छरसाल बुंदेला की परिवारी पीढ़ी में सनी राजा लकुरीर ने भी इसका उत्तरांश अपनी दुबार यात्रा के द्वितीय दिन योग विद्युत में किया है।

उत्सव ब्रज की पहिचान हैं  
या ब्रज की पहिचान उत्सव । वास्तव  
में इन दोनों बातों के बीच की  
परिचर्चा ही ब्रज संस्कृति की  
उत्सवधर्मिता के महत्व को रेखांकित  
करने वाली है। ब्रजमंडल में विश्व  
प्रसिद्ध होली के तुरंत बाद वृदावन में  
उत्तर भारत के प्रसिद्ध एवं पारंपरिक  
श्री ब्रह्मोत्सव का दस दिवसीय  
आयोजन यहां रथ कौ मेला के नाम  
प्रसिद्ध है। जिसे देखने सुदूर क्षेत्रों से  
लोग यहां आते हैं।

## रंगनाथ ने मोहिनी रूप में दिए दर्शन

दादी की घासाली में सदाचर झेंकर हाथों में **झूम्रा कड़वा** लेकर भ्रमण के लिए निकले भगवान रथमाला

प्राचीन विद्यालय, गुरुग्राम, जिसका सं  
विधान विभाग है। इसी संस्कृति के साथ  
जीवन की अनेक विषयों पर एक विश्वास  
दाता विद्यालय बनाया गया है। इसका उद्देश्य  
है कि यह विद्यालय जीवन की अनेक  
विषयों पर एक विश्वास दाता विद्यालय  
के रूप में विद्यार्थियों को शिक्षण  
के लिए उपलब्ध करें।

प्राचीन संस्कृतमें के लक्षण-पूर्वक, जिनमें में वास्तु विवरण दिए हुए हैं वहाँ इन संस्कृत शब्दों के अनुवान दिये गये हैं। यहाँ उल्लिखित करने के बाद इन शब्दों की विवरण दिए गये हैं।



मुख्यमंत्री ने कहा कि विदेशी वित्तीय संस्थाएँ भारत को अपनी वित्तीय स्थिति में बहुत ज्यादा विश्वास देती हैं। इसके लिए भारतीय वित्तीय संस्थाएँ अपनी वित्तीय स्थिति में बहुत ज्यादा विश्वास देती हैं। इसके लिए भारतीय वित्तीय संस्थाएँ अपनी वित्तीय स्थिति में बहुत ज्यादा विश्वास देती हैं।

ਜਾਇ ਜਾਂਦੀ ਮੌਜੂਦਾ ਤੁਹਾਨ ਵਥ ਵੀ, ਸੁਣ ਪ੍ਰਭਾਈ ਰੀ



देखुँगी सवारी मैं भी, जाय रंगनाथ की ...

वृन्दावन में रंग मंदिर का 'श्रीब्रह्मोत्सव' आज लोक जगत में 'रंगजी कौ मेला' के नाम से प्रसिद्ध हो चला है। रियासती काल में भी इस मेले का आकर्षण इस कदर था कि तत्कालीन समय में हर खास व आम श्रद्धा और जिज्ञासा के धरातल पर इसके प्रभाव में रहा। उस दौरान आने वाले यात्रियों के विवरण हों या तीर्थ पुरोहितों की बहियाँ और इसी के साथ लोक भावना में अभिव्यक्त काव्य पंक्तियां सभी कुछ इस मेले की लोकप्रियता के द्योतक हैं। वृन्दावन निवासी गोविन्द शरण जी की यह कविता तो एक जमाने में प्रसिद्ध रही- आय गयौ मेला अब रथ कौ सुनि आली री, देखुँगी सवारी मैं भी जाय रंग नाथ की.

श्रद्धा और भक्ति के धरातल पर दस दिवसीय श्रीब्रह्मोत्सव के मनोरथ में स्वर्ण एवं रजत निर्मित पारम्परिक वाहनों पर प्रभु की मनमोहक झाँकियाँ शुरू से मन मोहती आर्यों हैं। जिसमें 5वें दिन रजत-पालकी में विराजमान प्रभु का मोहिनी रूप भक्त के मन को मोहने में समर्थ है। इसी के साथ महाउत्सव में पूर्ण कोठी, सिंह, सूर्यप्रभा, हंस, गरुड़, हनुमान जी, शेष जी, कल्पवृक्ष, सिंह शार्दूल, कांच का विमान, हाथी, रथ की सवारी, अश्व, पालकी, चन्द्रप्रभा एवं पुष्प विमान पर प्रभु की अलौकिक लीलायें देखते ही बनती हैं। जिनके विस्तृत कथानक और आयोजन की पद्धतियाँ भी हृदयस्पर्शी हैं....

रंग जी के मेला में, आतिशबाजी चलै करामात की...

नित्योत्सवे नित्य मंगलम् भाव वृद्धावन के श्रीरंग मंदिर की सेवा भावना तथा उत्सवधर्मिता के परिचायक है। वृद्धावन की पहचान मंदिर-संस्कृति के धरातल पर पल्लवित हुई। यहाँ श्री रंग मंदिर की ये अपनी विशेषता है कि इसके कुछ उत्सवों ने स्वयं को मेला के रूप अभिव्यक्त किया है, जिसने वृद्धावन ही नहीं आस-पास के गाँव तथा इन स्थलों के लोगों से जुड़े रिश्तेदार भी उत्साह से यहाँ सहभागिता करते हैं। श्री ब्रह्मोत्सव के रूप में ‘रंग जी कौ मेला’ का दस दिवसीय आयोजन आज भी लोगों में स्फूर्ति और उमंग का संचार करना है। इसी क्रम में यह इस अवसर पर आतिशबाजी को देखकर भारतीय ही नहीं, यूरोपियन भी कायल रहे हैं।

ਇਹਾਂ ਵਿਖੀਆਲ ਮੌਜੂਦਾ ਸਮਾਜ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਕ ਹੈ।

2020 | अमेरिका की

ਮਾਨਸਿਕ ਅਭਿਆਸ ਦੀ ਵੱਡੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿਚ ਸਾਡੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਿਖੇ ਵੱਡੀ ਮਹੱਤਤਾ ਹੈ।

कार्यक्रम देखें

प्राचीन विद्यालयों का अस्ति-

प्राचीन विद्यार्थी के अपने उपर्युक्त  
विद्यालयों में से एक है।

ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਣੀਆਂ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ

卷之三

प्राणी विश्व का दृष्टिकोण  
का अधिक विवरण है।

संस्कृत-प्रेमी जगत् के प्रमुख  
व्यक्तिगत संस्थानों में से एक  
के विद्यार्थी गुरुजी हैं। उन्हें  
कला और साहित्य के अलावा,  
विज्ञान और इंजीनियरिंग  
के क्षेत्रों में भी बहुत लोकप्रिय  
हैं।

卷之三

નવી કાલ વિજય

पुस्तक रोड वैष्ण ने अपनी  
कालिकाम का अधिकारी के समौक  
प्रबोधन संस्थान की अधिकारी का  
वर्षीय द्वारा जारी गिरावटी की  
लापता विवरणों का अधिकारी  
द्वारा की गई विवरणों की विवरण।

ग्रन्थ की संस्कृतीकरण  
पर्याप्त नहीं होती।



most of your friends will be attending the Game 1 on Sunday Oct 18 at 1pm at Foothills • 8pm.

क्षेत्र के निवासी द्वारा उत्पन्न होने वाली जैविक ऊर्जा का उपयोग एवं इसकी विभिन्न विकासी अवसरों का विवरण दिया गया है।

## संस्कार प्रसाद का -

**ब्रज-वृन्दावन-** जहां पकवान [ Recipe ] सिर्फ़ प्रभु को आरोगने खाने-पकाने, स्वाद और आयोजनों में इसके दर्शन-प्रदर्शन मात्र की विषयवस्तु नहीं, अपितु श्रद्धा के धरातल पर पांडुलिपियों के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी इसके लेखन और गायन से यहाँ पल्लवित हुई, प्रसाद की व्यापक संस्कृति ...



जहाँ पाया ही नहीं, गाया भी जाता है प्रसाद

www | [www.bora.com](#)

प्राचीन पर्यावरण की विविधता के साथ सीधा जल की मात्रा बढ़ती है। इस पर, कुछ के अवासों की देखता जल के पाल करने की नई अवधारणा है। ऐसे साक्षरता की अवधारणा की विवरण भी हो सकती है कि उच्चतम जल स्तर के निश्चय जल की पाल करने की तरह जल की नियन्त्रित किए जाते हैं। वास्तव में जल की सीधी जल स्तर, जल स्तर, जल की आपूर्ति जल की जल स्तर जल स्तर की जल स्तर

परम भगवान् के विवरणोंमें  
लीटी चीज़ नहीं है। यह विषय के  
सामने आए रहा है।

- 1 -

- अपनी जिम्मे के लिए वहाँ की जगह  
कर्ता के जाले बिल्कुल
  - उत्तमतम विभिन्न देशों की  
सहभागी देशों की समर्पण आदि

विवरणों की जरूरत है।  
पुस्तकों और विवरणों में बिल्कुल  
इन विवरों के लिए इन से संबंधित जानकारी की जरूरत है। यह विवरों के लिए इन से संबंधित जानकारी की जरूरत है।

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇ ਸਾਡੇ ਮਾਮੂਲੇ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਪ੍ਰਾਤਿਸ਼ਤ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਵਿੱਚ ਵੱਡੇ ਹੋਏ ਹਨ।

**सामाजिक वैद्यकीय समाज की**  
संस्थानीय समाजः - सुप्राचल लोक  
संसाधन के लिए अधिक दर्दी तथा  
सर्व रक्षा समाज है जिसका लक्ष्य  
सामाजिक सुधार करना है, अतिरिक्त  
एवं इसको के लाभ के लिए लड़ता है।  
सामाजिक सुधार का एक बहुत विशेष  
विषय यह है कि विद्यों समाजीय-सामाजिक  
विषयों को लिये। यहां सामाजिक  
(सामाजिक) विद्या, वाक्यों और

ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸਾਡੀ ਅਤੇ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਕ ਵਾਲੀ

ਭੇਟੀ ਵਾਲੇ ਦੀ ਸੰਸਾਰਕਾਰ  
ਅਤੇ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਵਿਖੇ ਵੀ ਪਾਂਚ ਮੁੜੋ  
ਭੇਟੀ ਵਾਲੇ ਦੀ ਸੰਗ੍ਰਹਿ ਵਿਖੇ

सम्भव है कि यह विषय कामी हो जाएगा तो उसके लिए बड़ी संभावना है।

जल्दी की रियल एस्टेट नहीं बिल्डिंग्स के बारे में ज्ञानी प्राप्ति विकास पर्याय के साथ ही सीधारा के अन्तर्गत इकॉनोमिक विकास के लकड़ा विकास है।

ਭੀ ਸਾਨੂੰ ਕੁਝਾਂ ਅਤੀ ਭੀ  
ਪਾਹਿਜ਼ਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਮੈਂ ਜੁਗ ਦੀ ਪਾਸ,  
ਜਾਣ ਦੇ ਯਾਦ ਦੀ ਧਾਰਿਆਂ ਵਿਚਿਆਂ  
ਪਾਂਧੀ ਜਾਂ ਜੀਂਦੀ ਦੀ ਕੁਝਾਂ ਜਾਂ ਬਾਬੀ ਦੀ  
ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

प्रसाद के लेखन, गायन ने छज को बनाया खास

www.mechanicsgate.com

सारी विषयों की सहायता हेतु के  
लिए केवल विद्यार्थी नहीं बल्कि  
विद्यार्थीजन का लोक विद्यार्थी भी ही  
सहायता के लकड़ा ही न ही, तो इस  
विद्यार्थी की वाह करना का विषय उपर्युक्त  
विषय अनुप्रयोग है। इसकी सम्पूर्ण  
सम्भवता जो विद्यार्थी के लिए विद्या विद्या  
विद्यार्थी के विद्यार्थी विद्या विद्या होता है।  
विद्यार्थी को विद्यार्थी से विद्यार्थी विद्यार्थी  
का विद्यार्थी ही नहीं, विद्यार्थी विद्यार्थी  
जीव विद्यार्थी वे उपर्युक्त विषय विद्यार्थी  
विद्यार्थी ही हैं।

સુરત દેશ માટે

ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀਆਂ ਸਾਡੀਆਂ ਵਿੱਚ ਇਸ ਤੋਂ ਪੈਂਦੀਆਂ ਹਨ।

३०८

२० सालों से उत्तम प्रदर्शन की विदेशी

जो लोटी वह रात्रि की बिन्दुता के रूप आई है। यह  
समझने के दौरान उसका सब कुछ के रूप में बदलने  
का चाहा रास्ता बनाया जाएगा, जिसकी वजह से, उसके अ-  
स्वीकृत रूपों के द्वितीय रूप का नहीं पता होगा। यह  
स्थिर, जाति, जागरूक, दृष्टिकोण, जीवन का अवधारणीय  
स्थिर सम्पूर्ण वह विषय कम्पनी का नियम बनेगा है। यह  
सम्पूर्ण वह विषय कम्पनी का नियम बनेगा है।

ପ୍ରକାଶକ

इन संस्कृति विवरणों के बारे में इनकी जानकारी है। यह प्राचीन  
शिल्पीय ग्रन्थों का अध्ययन है जिसमें  
विभिन्न विवरणों के  
साथ ही वही इतिहास दर्शाती  
संस्कृति दर्शाती है। यहाँ आपको यह  
जानकारी दी जाएगी कि विवरणों के द्वारा  
क्या क्या बताया जाता है औ उसका अर्थ क्या है।



वर्ष 4 इंक 84  
पुस्तक 16  
मधुरा, गुरुवार  
7 सितंबर 2017  
नगर\*  
मूल्य ₹ 2.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

# दैनिक जागरण

## मंदिरों में खुशबू बिखेरेंगी अद्भुत सांझी

द्वापर में पितृपक्ष में ब्रज के मंदिरों में शुरू हुई सांझी सजाने की परंपरा, दर्शन को आते हैं दुनिया भर से लोग

जासं, वृद्धावन (मधुरा): अब पितृ पक्ष में मंदिरों में ब्रज की प्राचीन परंपरा के तहत सांझी उत्सव शुरू हो गए। सांझी के रंग एक बार फिर से मंदिरों के आहतों में अपनी खुशबू बिखेरेंगे। इसका दर्शन करने को देश दुनिया से हजारों श्रद्धालु आज भी पितृपक्ष में यहां आते हैं।

पितृपक्ष में ब्रज के मंदिरों में सांझी सजाने की परंपरा द्वापर में शुरू हुई तो ब्रजवासियों ने ब्रज संस्कृति में इसे समाहित कर लिया। काल और परिस्थिति के चलते भले ही ये परंपरा मंदिरों में सिमटती नजर आई तो संस्कृति के संवाहकों की चिंता बढ़ना लाजमी था। कुछ परिवारों ने सांझी परंपरा को न केवल संजोये रखा बल्कि इसे नए आयाम देने की भी कोशिश की। आज सांझी परंपरा को एक बार फिर पुराने स्वरूप में सामने लाने के प्रयास तेज हो रहे हैं। ये परंपरा अब मंदिरों से निकल कर कुंज निकुंजों में



वृद्धावन के मंदिरों में पितृपक्ष के दौरान बनने वाली रंगों की सांझी ● फ़ाइल फोटो

भी विस्तार पाती दिखाई देगी।

सांझी परंपरा का मंदिरों से सैकड़ों नाना प्रकार के फूलों से सांझी बनाती साल पुराना नाता है। मान्यता है जब श्रीकृष्ण का ग्वाल आनन्दित होते। कालांतर से यह परंपरा

में श्रीराधा अपने सखी परिकर के साथ नाना प्रकार के फूलों से सांझी बनाती थी। जिसे देख श्रीकृष्ण एवं ग्वाल आनन्दित होते। कालांतर से यह परंपरा

### राजे-रजवाड़े भी थे प्रभावित

दिया के राजा राव पारिष्ठित सिंह देव जू महाराज ने वृद्धावन निवासी हित परमानंद से सांझी की कोटी तैयार करवाई। इनकी सांझी की पोशी दिया स्टेट की राजकीय लाइब्रेरी में आज भी संरक्षित है। वही किंशनगढ़ के राजा सावंत सिंह शुद्ध सांझी के पदों की रचना किया करते थे।

### ये बनती हैं सांझी

मंदिरों में बनने वाली सांझी को फूल, रंग, पानी के ऊपर व नीचे कड़ी मेहनत के साथ तैयार किया जाता है। जबकि ब्रज के ग्रामीण अंचल में युवतियां गोबर से सांझी बनाया करती थीं। मगर, समय के बदलाव और आवृन्दिकता के प्रभाव ने ग्रामीण अंचल में गोबर की सांझी बनना लगभग खत्म ही हो गया है।

### साहित्य संगीत एवं कला में व्याप्त सांझी

ब्रज संस्कृति अध्येता डॉ. राजेश शर्मा का कहना है कि ब्रज मंडल में सांझी केवल कला का हुनर मात्र नहीं अपितु साहित्य एवं संगीत में इसकी व्याप्ति ने इसे मुद्रण तकनीकी से पूर्ण ही अधिक भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित कर दिया था। वही कारण है कि बुदेलखण्ड एवं राजस्थान सहित देश के विभिन्न हस्तालिखित ग्रंथागारों में सांझी का साहित्य आज भी विद्यमान है। वही इस मनोरथ के अवसर पर सांझी की पदावलियों का गायन मंदिरों में देखा जा सकता है।

मंदिरों में आज तक दिखती है। आरंभ में फूल सांझियां बनाई जाती हैं वहीं रंग एवं पानी के ऊपर तथा नीचे इस कला का अंकन देखते ही बनता है। नगर

के राधाबल्लभ, भट्टजी, राधारमण, शाहजहांपुर मंदिर, एवं यशोदानंद मंदिर कला का हुनर आज भी देखा जा सकता है।

समय के सापेक्ष राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय विस्तार पाया ब्रज की साँझी कला ने ...

साँझी की विविधताओं से उपजे आकर्षण ने इसे लोकप्रियता की ओर उन्मुख किया। जब ब्रज के श्रीविग्रह देश के विभिन्न स्थलों पर विराजित हुए तो ब्रज की यह कला भी वहाँ स्थानान्तरित हुई। यही कारण है कि जयपुर के लाड़िली जी मंदिर राजा श्रीनाथद्वारा दिल्ली के कटरा नील एवं बुंदेलखण्ड के दतिया में साँझी आज भी अपने गौरव के साथ जीवंत है। यही नहीं साहित्य के रूप की अभिव्यक्ति ने एक जमाने में अन्तर्राज्यीय विस्तार पाया। वृन्दावनी उपासना के साधक हित परमानन्द जी की साँझी पोथी विषयक पाण्डुलिपि की पुष्टिका (समापन) से यह जानकारी होती है कि दतिया के राव राजा पारीछत देव जू महाराज ने हित परमानन्द जी से साँझी पोथी तैयार करायी थी। वही राजस्थान की किशनगढ़ रियासत के राजा सावंत सिंह (नागरीदास) ने वृन्दावन निवास करते हुए साँझी विषयक प्रचुर साहित्य रचा।

ब्रज की मंदिर तथा लोक संस्कृति में साँझी के रंग भी अनूठे हैं। पितृ पक्ष के दौरान जब देश में मांगलिक आयोजनों की रफ्तार थमी-सी दिखती है, उस दौरान भी उत्सवधर्मी ब्रज की गौथूलिबेला साँझी के अंकन और स्वर लहरियों से गुंजायमान रहती हैं...



# दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

## मंदिरों तक सीमित ब्रज की प्राचीन साँझी कला

### ◆ ग्रामीण अंचल में गोबर की साँझी अब नहीं आती नजर

**जागरण संगाददाता, वृद्धावन:** ब्रजमंडल पर्व-उत्सवों के लिए विख्यात है। ब्रज की प्राचीन कहावत आठ वर, नौ त्योहार भी इस बात का प्रमाण देती है कि यहां हर दिन कोई न कोई उत्सव मनाया जाता है। पूरे साल में एक समय श्राद्ध पक्ष का ऐसा आता है कि 15 दिन तक जब दुनियाभर में कहीं कोई पर्व या शुभकार्य नहीं होते, ब्रज में इन दिनों भी पर्व अपने अंदाज में मनाया जाता है।

श्राद्ध पक्ष में इन दिनों ब्रज के मंदिरों में साँझी महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया जाता है। शहरी इलाकों में रंग व फूलों की साँझी बनाई जाती थी और ग्रामीण अंचलों में गोबर से साँझी बनाकर महोत्सव मनाया जाता है, लेकिन बदलते वक्त ने इस साँझी कला को मंदिरों तक ही सीमित कर दिया है। ब्रज के मंदिरों, कुंज और आश्रमों में मिट्ठी के ऊंचे अठपहलू धरातल पर रखकर छोटी-छोटी पोटियों में सूखे रंगों भर उनपर छानते हुए इस कला का चित्रण किया जाता है। आज



वृद्धावन के मंदिरों में रंगों से उकेरी साँझी, जिसके बीच में भगवान् श्रीकृष्ण-राधा की लीलाओं का दर्शन है। दूसरे चित्र में ब्रज के ग्रामीण अंचल में गाय के गोबर से बनाई गई साँझी। जागरण टा. राधाबल्लभ मंदिर, राधारमण मंदिर में नित नए साँझी जमीन पर भी बनाई जा रही है तो पानी की परात तरीके की साँझी बनाई जा रही है। साँझी में चारों ओर में पानी के ऊपर तैरती साँझी और पानी के अंदर साँझी का दर्शन कर ब्रह्मालु आल्हादित हो रहे हैं।



**ब्रज संस्कृति का अंग गोबर साँझी: ग्रामीण**

अंचलों में ये साँझी गाय के गोबर से बनाई जाती थी। शोध संस्था में संकलित पांडुलिपियों के अनुसार ब्रज लोक संस्कृति में गोबर से बनने वाली साँझी मैं वीरन बेटी का कथानक प्रचलित है, जो पितृ पक्ष में सुमुराल से मायके आती है। पूरी कथा के प्रतीक के रूप 16 दिनों तक अलग-अलग अंकन दीवार पर गोबर के द्वारा किए जाते हैं। समापन पर कोट बनाया जाता है, फूल-पत्ती, रंगीन कागज और कौड़ी आदि से सजाया जाता है। शाम को कुंवारी कन्याएं साँझी का पूजन करती हैं और पारंपरिक गीत गाती हैं। आज ये परपरा भी विलुप्त होती जा रही है।

ये आकृतियां बनती हैं 16 दिन वृद्धावन शोध संस्थान के निदेशक सतीश चंद्र दीक्षित ने बताया कि पांडुलिपियों के अनुसार 16 दिन तक जो आकृतियां गोबर से बनाई जाती हैं उनमें स्वास्तिक, पालकी, तीन तिवारी, पान, दीपक, ओडम, चंद्र-तारे, आठ कली का फूल, खजूर का वृक्ष, गणेशजी, नौका, धनुष-बाण, पट्टा वाली अम्मा, साँझी-साँझी, पान-सुपारी, ब्रवण कुमार, सूरज, बीजना और कोट आदि गोबर से अंकित किए जाते हैं।

## ब्रजवासियों से किशनगढ़ नरेश ने साझा की साँझी

दृष्टि | गतात्मक घटीक



नरेशील में साँझी की छोपन कृत्यकालीन है। 16 वीं शताब्दी के बाद से वह बनेवास और ऐकान्देरे के लालचीया हुआ। आज भी रेखालालों में इनका निर्वाह निर्माज रह रहा है। इस पाठ्यका को 16वीं शताब्दी में गत्तामध्यन किशनगढ़ के राजनायिक मिह (बालीदाम) ने अपने नवे प्रश्नों में आवाजन लक दर्खाया।

साँझी छोपन से प्रभावित राज महावा लिह ने पाठी बाल इह फोपा को अपनान के बाप भरे द्वारा से उत्तुह किया। अपने गुणावनाम के लैगवानोंमि साँझी के साथे आसांगा कागज और साँझी की गोलां करता। बंधा 18:14 में अपने पुत्र कुंवर-

किशनगढ़ नेता राज मिह (बालीदाम) का नाम है। • हिन्दुस्तान साहारा मिह की विवाह का राजवाह और बृंदावन में विवाह किया। नरेशील का ये जल्दी इनकी बच्ची आज भी इनकी बलाचारी की राह है। बृंदावन में विवाह से पूर्व अपने प्रजनाम के लैगवान उन्हें बृंदावन बूढ़ा कहा। इनके द्वारा गीता की विवाद द्वारा से वह जलमाही विसर्गी है।

### बृंदावन शोध संस्थान ने जुटाई दुर्लभ सानवी

**वृद्धावन।** बृंदावन शोध संस्थान के निदेशक सतीष चंद्र दीक्षित का कहना है कि संस्थान के द्वारा ब्रज संस्कृति के दुर्लभ तथा अप्रकाशित संदर्भों का संकलन ब्रज संस्कृति विश्वकोश के अंतर्गत हो रहा है। इससे ब्रज के दुर्लभ संदर्भों से परिचित हो सकेंगे।

**अद्भुत है ब्रज का सांझी मनोरथ**

www.ijerph.com

जब वही लाली गुलाब के लिए उसी  
से लाली जड़ के चारों दिन  
उसका लाली लाली गुलाब  
प्राप्त करना चाहता है।

ਕਾਮ ਵਿੰਡੀ ਦੇਣਾਵੀ ਹਾਂ ਜੋ ਸ਼ਹੀ  
ਭਾਵੁਕੀ ਨੇ ਪਾਸਾਂਕਿਤ ਹੁੰਦੀ

राष्ट्रवालाय वैदिक ये  
२५ से माझेमी मात्रों

प्राचीन, अधिकृत विद्या का  
लोक लिख लगानी में जी-



www.w3.org/2001/XMLSchema

ਕੁਝ ਸੱਭਾਵ ਮੌਜੂਦ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਣਾਲੀਆਂ ਵੱਡੀਆਂ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ।

श्रद्धा के धरातल के पर उच्चस्तरीय सांस्कृतिक परिदृश्य स्थापित किया है युग-युगीन फूल बंगला कला ने ...

# हिन्दुस्तान

तरककी को चाहिए नया नजरिया

# फूलखंगले आज भी बोलते हैं सदियों पुरानी शब्दावली

Digitized by srujanika@gmail.com

à leur époque, cette  
école fut une des plus  
actives et des plus larges  
à l'époque où les ap-  
pels d'engagement furent le  
plus nombreux. Les  
généraux furent de la  
guerre de Sécession et  
de celle de l'Indépendance  
aux dernières guerres, mais  
aussi dans les campagnes

qualcosa di diverso.

and in which case there is  
greater net benefit of  
these interventions.  
Such a strategy would  
allow us to target our  
resources more effectively  
and to reduce the  
burden of disease on  
patients. Such a strategy  
would also reduce the  
burden of disease on  
patients.

卷之三

It is the first time I have  
seen him, and it's quite  
a long time since you last  
met me, my dear, and  
most, most, good-bye.

वृन्दावन सोइ रितु प्रगटावे, जोइ-जोइ दंपति के मन भावै ...



# दैनिक जागरण

मिशन का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

**साहित्य ने भी गढ़े फूलबंगला**

पहले मंदिर के यमीनों के फूलों से ही सजाया जाता था। याकेविहारी का बंगला

ज्ञानवाच अनुसारम् । दृष्टिम् । तो  
न्यायविज्ञानी वक्तव्य अपेक्षित भूमिये  
साक्षात् तरी की दीनांकात्तिव्रत सिंहा व  
सुनांवत्तिव्रत वक्तव्य अपेक्षित विज्ञान वाचात्  
तरी भूमिये तरी । भूमिये तरी की दीनांकी  
तरी वक्तव्य तरी । वक्तव्य वाचात् तरी दीनांकी  
वक्तव्य भूमिये तरी वक्तव्य वाचात् तरी ।

कृष्णन के नूतनवाचनों का वार्ता का प्रतिक्रिया लगाना चाहा था। यह अधिकारी ने जवाब दिया है : परंपरामें उत्तर दिया गया, अबकी अवधि में उत्तर दिया गया तो उत्तर लगाना चाहा गया है। अबकी अवधि में उत्तर दिया गया है।



मुख्यमंत्रीवाद से अलगी वादाएँ भी उपर्युक्त वाक्य में शामिल हैं, जैसे यह वाक्य 'मुख्यमंत्री अद्वितीय विधायिका है'। 137 में 15 की वार्ता के बाबत इस वाक्य को मुख्यमंत्रीवाद नहीं कहा, अलगी वादाएँ यह पीछे विधायिका वाद, 138 वाक्य के बाबत कहा गया है।

एवं अन्य पर्वतों के बीच स्थित है। इसके पास एक नदी का निर्माण हो गया है। इसके दोनों ओर लोगों के घर बने हुए रहते हैं। इसके ऊपर जल की खींचने में एक धूमधारा भी बिल्कुल नहीं देखी गई। इसकी अनुमति नहीं दी गई।



# दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

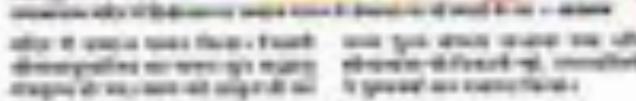
## समाज गायन में गुंज रहे बघाई के पद

गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन जगती पार नामायनाम आदि मनाया जा रहा। गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन की विस्तृत विवरणों का उल्लेख किया गया है।

गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन की विस्तृत विवरणों का उल्लेख किया गया है।

गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन की विस्तृत विवरणों का उल्लेख किया गया है।

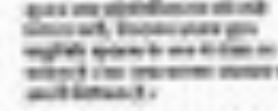
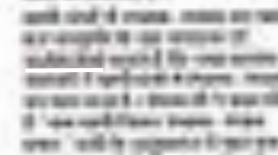
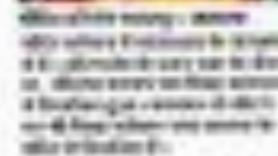
गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन की विस्तृत विवरणों का उल्लेख किया गया है।



गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन की विस्तृत विवरणों का उल्लेख किया गया है।

गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन की विस्तृत विवरणों का उल्लेख किया गया है।

गिरा हरियाणा महाप्रभु दर्शन की विस्तृत विवरणों का उल्लेख किया गया है।



ॐ अमर उजाला

अब होली के रंगों में नहीं रही चोखा, अगरु और अरगजा की महक

ਅਤੇ ਅਨੁਸਾਰ ਕਿ ਸਾਡੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਤਾਂਤ੍ਰਿਕ ਵਿਗਿਆਨ ਵਿੱਚੋਂ ਹੈ, ਯਹ ਕਾਨੂੰਨ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ੀਤਾਵਿਗਿਆਨ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਮਾਣੀਤ ਹੈ।

100-00000

सुन लोगों का अवलोकन है।



निर्वाचन के बाद नेहरू ने दो दिन बाद, जब वहाँ आकर लोकसभा भवन परिसर में उत्तम धूमधारी घोषणा की गई, वह अपनी विश्वासीता का एक और अद्भुत उदाहरण दिखाया।

प्राचीन विद्या के लिए संस्कृत  
का उपयोग किया जाता है।

ਪੰਜਾਬ ਸਰੋਤ ਦੇ ਪਾਸ ਹੈ ਜੋ ਕਿਸੀ ਵੀ ਵਿਸ਼ਾ

100

1998-00000000  
1998-00000000

ਗੁਰ ਮਿਸ਼ਨਾਂ ਵਿੱਚ ਪ੍ਰਤੀ ਸਾਲ  
ਅੰਦਰੋਂ ਵਿੱਚ ਆਪਣੇ ਸਾਡੇ  
ਅਤੇ ਸ਼ਹੀਦੀ ਵਿੱਚ ਸ਼ਹੀਦੀ  
ਕਰਨ ਵਿੱਚ ਸ਼ਹੀਦੀ ਕਰਨ ਵਿੱਚ

Take and use the system without question.

जिसका एक अपेक्षा करने की विधि है। यह विधि विभिन्न विधियों का समूह है।

• 第二部分：問題與解題

## फागोत्सव में झूमते थे मुहम्मद शाह रंगीला

**ब्र** ज की होली का रंग कुछ ऐसा ही खूब बिखरा है। दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद शाह रंगीला ने भी होली पर कविता लिखे। वह सदारंग के नाम से कविता करता था। हिंदुस्तानी मीनालिसा बाणी-धणी के गढ़ने वाले राजा सावंत सिंह ने तो ब्रज के हर स्थान पर होली होली के बारे में लिखा है।

राजदरबारों से जुड़ी ब्रज की होली की खातिकों को बनावे रखने में उन साहित्य साधकों को विस्मय नहीं किया जा सकता। उन्होंने पिछले सैकड़ों वर्षों में इसे पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया। अकबर ने अपने दरबार में होली खेलने की परंपरा को शुरू किया। उन्होंने इसे खूब संरक्षित किया और वह खुद भी होली खेला करता था। इसके बाद भी कई मुगल सुल्तानों ने होली के रंगों को जारी रखा। 16 से 19वीं सदी तक होली की ब्रजभाषा साहित्य में उपस्थिति इसे एक महापर्व के रूप में रेखांकित करती है। वैष्णव सम्प्रदाय से जुड़े मंदिरों के साथ ही देश की अलग-अलग रियासतों में भी राजकवियों में होली पर काव्य सृजित होता रहा।



मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला का होली खेलते हुए चित्र ●

मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला ने सदारंग उपनाम से ब्रजभाषा में रचनाएँ की। इसमें उनकी होली विषयक रचनाओं में ब्रज की होली का परिदृश्य दिखता है-

...इक गावत इक बीन बजावत, अबिर गुलाल लिये भर झोरी।

सदारंग बरसत गोकुल में, खेलत नंद कियोरी॥

वहीं आगरा के प्रसिद्ध नजीर अकबरावादी ने अपनी रचनाओं में होली के रंग खूब उड़ाते हैं-

जब फागुन रंग झमकते हों,  
अब देख बहाएं होली की।

जब डफ के शोर खड़गते हों,  
अब देख बहाएं होली की।...

18वीं सदी में दिल्ली दरबार का वैभव देख चुके किशनगढ़ नरेश सावंत सिंह साधक के रूप में नागरीदास बन ब्रज की होली के रंग में रंग गये थे। राजा सावंत सिंह वृदावनी उपासना में रम कर नागरीदास बने और उन्होंने न केवल चित्रकला बल्कि साहित्य में भी ब्रज

की होली को उस दौर में संरक्षित किया। होली पर केन्द्रित पठ-पदावलियां तथा एक स्वतंत्र ग्रंथ 'फाग विलास' उन्होंने लिखा। उनके दरबारी चित्रकारों के होली विषयक चित्र आज भी ब्रज की उस मनभावन होली की गाथा कह रहे हैं।...

ब्रज ते सोभा फाग की, ब्रज की सोभा फाग।  
सब जग में ब्रज फाग की, गावत है अनुराग॥

●प्रस्तुति: योगेश्वर जादोन

- दिल्ली के सुल्तान ने सदारंग के नाम से की ब्रजभाषा में कविता
- किशनगढ़ नरेश सावंत सिंह ने होली पर तिखा फाग विलास

10वें मुगल बादशाह मुहम्मद शाह रंगीला ने सदारंग उपनाम से अपने इस पद में गोकुल की होली का रंग इस तरह लिखा-

अहो धून धुकार डफ मृदंग बजत हैं, विच मुरलीघन धोरी।

चोबा चंदन और अरगजा, के सररंग में धोरी॥

यक गावत यक बीन बजावत, अविर गुलाल लिये भर झोरी।

सदा रंग बरखत गोकुल में खेलत नंद किशोरी॥

 मुगल बादशाहों ने होली को लेकर खूब रुचि दिखाई है। मुहम्मद शाह रंगीला से लेकर बाजिश अली शाह भी होली को लेकर उत्सुक रहते थे। रंगीला ने सदारंग के नाम से होली के पद लिखे।

राजेश शर्मा, वृदावन शोध संस्थान



मुगलकाल में होली सब पर गालिब थी ...



विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अख्खान

# दैनिक जागरण

**ब्रज की होरी के रंगन नै मिटायौ मजहब कौ भेद**

Environ Biol Fish (2007) 79:1–10

ge di cui si tratta è un  
ciclo, processi che sono  
sempre accesi, che oggi non  
potrebbero più esistere se  
non ci fossero molti milioni  
di abitanti nel pianeta  
che offre di ogni tipo di  
ambiente e risorse, con  
una storia geologica che si  
estende per quasi due bi-  
milioni di anni.

mento a questi dati per  
rendere più concreta tutta la sua  
vita così ripiena di avvenimenti  
negativi che possono essere di tipo te-  
ologico, ma anche di tipo so-  
ciale, familiare, politico, ecc. In que-  
sto senso però, anche se non  
è del tutto chiaro come si possa  
interpretare questo punto di  
vista, il prete ha un suo

精英教育网 www.yingling.org

*Leibniz's principle of sufficient reason*



Algunas personas creen que el humor es una forma de expresión que ayuda a las personas a manejar la presión y el estrés. Otros piensan que el humor es una forma de escapar de la realidad y de no enfrentar los problemas. Sin embargo, el humor puede ser una herramienta útil para manejar la presión y el estrés.

**पर होरी क**



participate, and  
will the financial  
aid you receive be  
based on family size  
or income?

दाकु कै

## हुरंगा है

8